A A A A A A A A A A A A A A A

सभी पाठकों को दशहरा एवं दिपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

ग्रामः टीकर पोस्टः टीकर (पैना) जिलाः देवरिया, उ0प्र0 में

निर्माणाधीन अनाथ एवं बृद्धा आश्रम में सहयोग करें.

निवेदकः

दाउजी, संचालक

जी.पी.एफ. सोसायटी एवं

स्नेहालय (अनाथ आश्रम एवं बृद्धाआश्रम)

सहयोग हमें निम्न पते पर भेजेः

एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

A A A A A A A A A A A A A A A

ROYAL HOUSE PUBLIC SCHOOL

521, Madhya Daraganj (Transformer's Lane), Allahabad-6

"Join Royal House to Complete, your child's incomplete education"

"Always be Progressive"

School Building →

स्थापित 1982 मान्यता प्राप्त रजिः 1030

किशोर गर्ल्स हाईस्कूल एवं कॉलेज

कक्षाए : नर्सरी से कक्षा 12 तक

प्रधानाचार्या
कु0 सविता सिंह भदौरिया

मीरा पट्टी, टी.पी. नगर, जी.टी.रोड, इलाहाबाद

प्रबंधक
वी.एन. साहू

सम्पादकीय

वर्ष : 3, अंक : 10, अक्टूबर 2003
हिन्दी मासिक पत्रिका
स्नेह समाज

प्रधान संपादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

कार्यकारी संपादकः
डॉ0 कुसुम लता मिश्रा

सहायक संपादक
रजनीश कुमार तिवारी

संयुक्त संपादक
मधुकर मिश्रा

सलाहकार संपादक
नवलाख अहमद सिद्दीकी

विज्ञापन प्रबंधक
श्रीमती जया शुक्ला

संवाद प्रमुख
नवल किशोर तिवारी

ब्युरो प्रमुखः
गिरिराजजी दूबे

पंजीयन संख्या
(R.N.I. NUMBER)
UPHIN2001/8380
डाक पंजीयन संख्याः
एडी.306 / 2003–04

व्यूरो कार्यालय
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल नगर, भुजौली कॉलोनी, देवरिया ☎(05568)25085
पत्रव्यवहार का पता :
एल.आई.जी.–93, नीमसराय, मुण्डेरा, इलाहाबाद
मो0: 3155949 फैक्स सं0 : 0532–2655595
सम्पादकीय कार्यालय :
एम0टेक कम्प्यूटर एजुकेशन सेन्टर, पावर हाउस के पास, धुस्सा, इलाहाबाद ☎0532. 3155949, 2552444

प्रिय मित्रों,

नमस्कार

हमें खेद है अपरिहार्य कारणों वश हम अपना बहुप्रतिक्षित, बहुप्रचारित "पत्रकारिता एवं जनसंचार" विशेषांक अपने निर्धारित समय पर नहीं निकाल पा रहे है। इसके लिए हमें खेद है। यह अंक अब आगामी माह में प्रकाशित होगा। हमारा पूरा प्रयास है कि विशेषांक को आपकी आशा के अनुरूप ढ़ाले।

उत्तर प्रदेश में एक तानाशाही शासन का सत्रावसान हो गया। एक महिला जो अपने आपको को दलितो का मसीहा, दलित हितैषी व आयरन लेडी के नाम से जाना जाना पसंद करती थी उसके पास करोड़ो रूपये की प्रापर्टी, हजारों एकड़ भूमि का फार्म हाउस, नवलक्खा हार, वेशकीमती अंगुठिया, करोड़ो के कपड़े कहॉ से पा गयी। हमारे प्रदेश के दलित तो दो वक्त की रोटी के लिए मरते है। अगर बहन जी अपना नवलक्खा हार की कीमत इन दलितों में बाट दी होती तो हजारो परिवारों को अच्छी रोटी व कपड़ा तो मिल ही जाता। दलित उत्थान की बात हमारे संविधान बनने से प्रारम्भ होकर आज 54 वर्ष व्यतीत होने के बाद भी होती जा रही है। इसके लिए बाबा साहब अम्बेडकर से लेकर अब तक कितने नेता व पार्टियें ने इसके नाम पर अपने को दलितो का मसीहा कहा। इनमें बहन सुश्री मायावती सर्वोपरि है। जो दलित उत्थान के नाम पर देश के सबसे बड़े सूबे की बागडोर सम्भाली लेकिन गॉव का दलित आज भी वहीं है जहॉ वह पहले था। लेकिन दलित महिला नेता जो इन्द्रपुरी, दिल्ली में अपने पिता के छोटे से मकान से उठकर मुख्यमंत्री बनी। उसके पास आज प्रदेश में वीसियों आलीशान बगले है। क्या यही दलित कल्याण है या दलित के नाम पर अपना कल्याण है।

आज इस देश को जरूरत है एक युवा क्रांति की जिससे समाज के कोढ़ भ्रष्टाचार जो की नेताओं और नौकरशाहो के नश–नश में वश गया है उसे हटाया जा सके।

भारत मॉ की यही पुकार,
दूर करो ये भ्रष्ट्राचार।

(प्रधान संपादक)

प्रगति के पथ पर जिला पंचायत कौशाम्बी

vR;Urm ç gekaxkZ ds dkj.k xkWo rd igqWpus esa ftyk iapk;r dkS'kkEch dh Øe'k% iDdh lM+dks dk fuekZ.k] iqfy;ksa dk fuekZ.k djk tul/kkj.k ds vkokxeu ds ekxkZ dks lqxe cukus esa fujUrj d`r ladYi gSA ftyk iapk;r us djhc 200 fdeh0 dPph 10 fdeh0 iDdh 35 fdeh0 lksfyax ,oa 40 iqfy;ksa dk fuekZ.k djk;k gS rFkk&&

1- ,l-th-vkj-okbZ esa 278 lM+dks o 80 iqfy;ksa] jkT; foRr vk;ksx ds vUrxZr 25 lM+ds cukus dk izLrko blo"kZ fy;k x;k gSA

2- ,sfrgkfld lFky dM+k nsoh /kke es lkSn;hZdj.k ,oa ,sfrgkfld ,oa /kkfeZd egRo ds izHkk'kfxfj esa lhf<+;ksa dk fuekZ.k dk;Z 'kq: gks x;k gS] tks vfoyEc iw.kZ gks djvius u;s Lo:i esa vk tk;sxkA

3- ;kf=;ksa ds lqfo/kk ds fy, lM+dd ds fdukjs ftyk iapk;r dh dktkjksa esa 7 ;k=h Nkan cukus gsrq blo"kZ dk dtV esa O;oLFkk dh x;h gSA

4- f'k{kk ds fy, ftyk iapk;r i f'pe 'kjhjk esa ,dd U;k fo|ky; b.Vj Lrj dk lapkyu dj egRoiw.kZ ;ksxnku ns jgh gSA

5- dkS'kkEch tuin esa is;ty dh xEHkhj leL;k dks nwj djus ds fy, ftyk iapk;r 20 gS.MiEi yxok, gS rFkk blo"kZ Hkh 50 gS.MiEi yxok;s tk jgs gSA

6- xzkeh.k {ks=esa iV~Vh ujoj ewjrxat esa gkV iSB dk fuekZ.k djfdlkuksa dh Qly lCth vkfn dk mfpr ewY; fnykus ds {ks= esa ,d lkFkZd iz;kl fd;k gSA ewjrxat Cykd ds xzke /kUuh esa blo"kZ ,d vkS j gkV iSB cukus dk dk;Z 'kq: dj fn;k x;k gSA

7- ftyk iapk;r xzkeh.k {ks=kksa esa ikuh ds fudklh gsrq ukyh dk fuekZ.k] cs jkstxkjksa dh O;olk; gsrq nqdkuksa dk fuekZ.k] tuin ds nwf"kr do,Wo s tydh lQkbZ djkus] egkekjh dh jksdFkke gsrq nok vksa ds fNM+dko] i'kqvksa dh O;oLFkk gsrq eos'kh [kkuksa dh O;oLFkk dj jgh gSA blds lkFk&lkFk dfczLrku dh dkm.Mªh ,oa 'konkgx`gksa esa ;Fkk vko';d 'ksMyxkus dh O;oLFkk dj ftyk iapk;r dkS'kkEch dks ,du;h fn'k iznku dj jgh gsSA

8- uSok?kkVksa dk lapkyu dj rgdktkjh] lh-ih-dj] ykbolsal bR;kfn esa c`f) dj Lo;a vius iSjksa ij [kM+s gksdj mRrj izns'k esa viuk ,d LFkku cukus dh vksj fujUrj vxzlj gSA

कपिल मुनि करवरिया

अपर मुख्य अधिकारी
जिला पंचायत, कौशाम्बी

अध्यक्ष
जिला पंचायत, कौशाम्बी

विशेष ऑफर विशेष ऑफर विशेष ऑफर

फीस मात्र
100 / रूपये महीने

M-Tech
(COMPUTER EDUCATION CENTRE)

एम.सी.ए, बी.सी.ए. सी.आई. सी., डी.सी.ओ, ओ लेवल, ए लेवल, पी.जी.डी.सी.ए, डी.सी.ए. एवं
अन्य कोर्सेस : टैली, जॉवा, विजूअल बेसिक, आटो कैड, सी++,3डी होम, ओरेकल, इंटरनेट
कम्प्यूटर द्वारा कुन्डली, जॉब वर्क, प्रोजेक्ट वर्क, विजिटींग कार्ड, शादी कार्ड, थीसीस

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करे:
एम0टेक कम्प्यूटर एजुकेशन सेन्टर,
कौशाम्बी रोड, धुस्सा पावर हाउस के पास, धुस्सा, इलाहाबाद मो0: 3155949

शाखा: एल.आई.जी 93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

बेबाक

यासर अराफात के निष्कासन से इस्रायल को कोई फायदा नहीं होने वाला है।

अमेरिका

इस्रायल द्वारा यासर अराफात के निकालने के मुद्दे पर

सभी को धार्मिक आजादी के साथ भारत का उदारवादी और सहिष्णु चरित्रा हमेशा बरकरार रहेगा।

अटल बिहारी वाजपेयी

प्रधानमंत्री, चेन्नई में 'द हिंद' के उदघाट्न के अवसर पर

जनता को शीघ्र एवं सस्ता न्याय उपलब्ध कराने के लिए प्रयास किए जाए क्योंकि खर्चीली मुकदमेंबाजी की वजह से जनता के मन में कुंठा व्याप्त हो रही है।

जस्टिस वी.एन.खरे

प्रधान न्यायाधीश, सुप्रीमकोर्ट वाद निवारण पर आयोजित एक संगोष्ठी में बोलते हुए।

असल जिंदगी की भूमिका टीवी. या फिल्मों की भूमिका से बेहतर है।

कपिल देव

भारतीय क्रिकेटर, सोनी टीवी. के कार्यक्रम 'कपिल आपके घर मे' में

अयोध्या मुद्दे पर किसी के दवाब में नहीं आऊँगा।

मुलायम सिंह

मुख्यमंत्री, उ0प्र0

नई दिल्ली में प्रेस कांफ्रेंस में

भारतीय जनता पार्टी एक फिर होगी 'काशी शरणं–मायां चरणं'

कल्याण सिंह

पूर्व मुख्यमंत्री, उ0प्र0,संवाददाता से बातचीत में

कल्याण सिंह मेरे लिए भगवान है।

कुसुम राय

राष्ट्रीय क्रांति पार्टी से मंत्री बनाए जाने पर।

इराक में धन और बल से सहयोग करें।

जार्ज डब्लू बुश

अमेरिकी राष्ट्रपति, संयुक्त राष्ट्र संघ में प्रस्ताव पर

बेहतर हॉकी खेल सकते हैं गॉव वाले।

धनराज पिल्लै

हॉकी टीम के कप्तान

कोई भी खिलाड़ी इस भुलावें में न रहे कि टीम में उसकी जगह सुरक्षित है।

सौरव गांगुली,

कप्तान, भारतीय क्रिकेट टीम,

भारत को विकसित करने में योगदान दे व्यापारी

पं. विष्णुकांत शास्त्री

राज्यपाल उत्तर प्रदेश

उत्तर प्रदेश की मुलायम सिंह सरकार में शामिल होने पर कोई भी निर्णय उचित समय पर ही लिया जाएगा।

सोनिया गॉधी

चंपारण, रायपुर में पार्टी के राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर सेवादल को सम्बोधित करते हुए।

अब प्रदेश में गुंडे और माफिया शासन चलाएंगे।

सुश्री मायावती

पूर्व मुख्यमंत्री, उ0प्र0

अपनी कुर्सी से हटने के बाद

भारत में आतंकी हमलों से शांति प्रक्रिया पर असर नहीं पड़ेगा।

मीर जफरल्लाह खान जमाली

प्रधान मंत्री, पाकिस्तान

अटल की संपत्ति की जांच हो

सुश्री मायावती

तत्कालीन मुख्यमंत्री, उ0प्र0

पूर्ववर्ती सरकारों ने बाढ़ राहत के नाम पर जितना दिया है उससे अधिक राहत दी जाएगी।

मुलायम सिंह यादव

मुख्यमंत्री, उ0प्र0

हम राजग के एजेंडे से हटकर मंदिर निर्माण में विहिप का साथ देंगे और इसके लिए कानूनी अड़चन भी दूर करेंगे।

↓

अरे भाई, करें भी तो क्या? साढ़े चार साल सोये रहे राजग के एजेंडे के साथ, अब जगे है।

भाजपा के आगामी चुनाव की तैयारी है अयोध्या मुद्दा

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

जैसे–जैसे चार विधानसभाओं के चुनाव और लोकसभा के चुनाव की तारिख नजदीक आती जा रही है अयोध्या के राममंदिर का मुद्दा जोर पकड़ता जा रहा है. यद्यपि मानसून ने इस बार भरपूर साथ दिया. मौसम धीरे–धीरे ठंढा होता जा रहा है लेकिन भारतीय जनता पार्टी व उसकी विश्व हिन्दू परिषद के नेता मुद्दों के अभाव में इसे धीरे–धीरे गरम करते जा रहे है. लेकिन इस बार भाजपा के इस मंदिर रूपी मुद्दे की गर्मी प्रकृति के ठंढक के आगे दबकर एक अगीठी की तरह कोठरी में समाहित होता जा रहा है. यह पूरे वातावरण में गर्मी पैदा नहीं कर पा रहा है. यह आम जन की शहर व गॉव की जनता के विचारों से भी भलीभॉति मिलता लग रहा है.

जब तक भाजपा को सत्ता नहीं मिली थी तब तक भाजपा का नारा था–'सबको देखा बार–बार, हमको देखो एक बार.' वास्तव में भाजपा सरकार ने अपने एक 13 महीने व एक लगभग पचवर्षीय कार्यकाल में आम जन को, अपने सैद्धांतिक विचारों को जिनके बल पर भाजपा आम जन में अपनी पैठ बना पायी थी, को सत्ता के लिए तिलांजली देकर यह साबित कर दिया कि वह वास्तव में केवल एक बार देखने व परखने के ही लायक है. दो बार सत्ता मिल गयी यह तो बहुत ही अधिक हो गया. उसका सत्ता में तीबारा काबिज होना देश व जनहित दोनों के लिए उचित नहीं होगा. जब भी कोई आम जन के हित की बात आती है तो भाजपा के शीर्ष नेता राजग गठबंधन की मजबूरी का रोना रोकर सबको शांत कर देते. लेकिन जब उनके स्वहित की बात आती तो राजग की कोई मजबूरी नहीं होती. इसका स्पष्ट

> एक समय राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की मजबूरी का रोना रोकर अयोध्या के राममंदिर के मुद्दे से लम्बी दूरी बनाये रखने वाली भाजपा आज राममंदिर निर्माण के लिए सारी बाधाएॅ दूर करने का दंभ रही है. यह एक चुनावी स्टंट नहीं तो और क्या कहेगें इसे आप?

उदाहरण विगत वर्ष गुजरात में हुए दंगे के बाद देखने को मिला. राजग के सहयोगी दलों के नरेन्द्र मोदी के इस्तीफे की मांग के बावजूद निठल्लेपन के साथ ऐसा करने से मना कर दिया. विपक्षी दलो ने भी इस पर काफी हो हल्ला मचाया. मगर मौनी बाबा प्रधानमंत्री मौन साधे रहे. फिर बात उठी धारा 370 को जम्मू काश्मीर समाप्त करने की वह भी समाप्त, अभी हाल ही में सुप्रीम कोर्ट के निर्णय में कि एक समान नागरिक संहिता होनी चाहिए. भाजपा ने चुप्पी साध ली राजग की मजबूरी के बल पर. मंदिर मुद्दा भी कई बार उठा मगर मजबूरी है कहकर पल्ला झाड़ लिया गया. भाजपा की सत्ता के दूसरी पारी के लगभग चार वर्ष पूरे हो चुके हैं लेकिन इन चार वर्षो में न तो अयोध्या की याद आयी न राममंदिर की. मगर अब जब लग रहा है कि उसकी नैया का खेवनहार अयोध्या मुद्दे के अलावा कोई और मुद्दा नहीं है तो राजग की मजबूरी को किनारे छोड़ राममंदिर के मुद्दे के

jkeeafnj fuekZ.k dk na Hkk Hkjus dk ys Hkktik o fofgi us rk vksa ads

v;ks/;k esa fookfnr <kapk <gkus esa vkjksfir gksus ij fopkj%

vEN kgks rk ;fn es js lkFk vnky r vU; vkjks fi;ksa dks Hkh cjh dj nsrh- **ykyd`".k vkMok.kh**] mi iz/kkuea=h] Lo;a ds cjh gksus ij

eSa ml jkst v;ks/;k esa fookfnr <kaps ls cgq nwj Fkh- fQj Hkh nks'kh ik, tkus ij [kq n dks HkkX;'kkyh ekurh gwa- **mek Hkkjrh**] e/; izns'k] Hkktik v/;{k

dksVZ ds Q Sys dk iwjk lEeku o Lokxr gS] ij arq fun sZ'k Hkxoku jke vkS j fganw lekt dk gh ekus axs- **fou; dfV;kj**] mRrj izns'k Hkktik v/;{k

leku/kkjk vksa esa fj iks VZ esa gks rs gq, ds oy ykyd`".k vkMok.kh dks vkjksiea qDr djuk le> ls ijs gS- ;g rks Hkfo"; gh crk,xk fd Q Slyk D Slk gS&

v'kksd fla?ky] fofgi ds vUrjkZ'V ªh; dk;Zdkjh v/;{k

gekjh utj esa iwjh U;k; iz.kkyh gh nks'kiw.kZ gks xbZ gS ftlesa cs olwj ksa dks Hkh ltk fey tkrh gS- fQj Hkh vkMok.kh dks cjh gksus ij c/kkbZ&

fxjkst fd'ksj] fofgi usrk

राग को अलापने लगे. विहिप और भाजपा के बड़े नेताओं की वकायदा एक बैठक में इस मुद्दे पर विचार विमर्श हुआ और इसे जमकर उठाने के लिए संयुक्त बयान भी भाजपा के दूसरे नंबर के नेता उपप्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी, भाजपा के अध्यक्ष वेंकैया नायडू के द्वारा दिया गया. अब तो भाजपा का खुलेआम नारा लगने लगा है—'रामलला हम आएंगे, मंदिर वहीं बनाएंगे।' इस मुद्दे में एक नया मंत्रा रायबरेली की अदालत में भाजपा व विहिप नेताओं को इसमें आरोपित कर दिये जाने से मिल गया. इसमें भी कहीं न कहीं से सत्ता के दुरूपयोग की बू आती है. भाजपा का एक शीर्ष नेता जो राममंदिर आंदोलन का मुखिया था, को बाईज्जत बरी कर दिया गया. इससे भाजपा व संघ के अंदर भी सुगबुगाहट का स्वर सुनाई देने लगा है.

बात केवल मंदिर की हो तो भी ठीक है. आम जनता, बेरोजगारी, गरीबी, शिक्षा, चिकित्सा, पानी, सड़क जैसे मूलभूत आवश्यकता की चीजों से वंचित है, लेकिन सरकार को क्या उनको तो कुर्सी से मतलब है. साफ छबि की भाजपा जिसे जनता बहुत पंसद करती थी आज कांग्रेस शासन के भ्रष्टाचार की सीमा से हजारों मील आगे निकल चुकी है और इसकी हद को पार कर गई है. हमारे राष्ट्रपति महोदय का यह कथन कि—'हमें मंदिर, मस्जिद, चर्च और गुरूद्वारा नहीं बल्कि विकास चाहिए.' हमारे देश की आम आवाम की आवाज को ही बुलंद करता प्रतीत होता है. हमें अब विकास चाहिए. ये छलावे वाले मुद्दे नहीं.

डॉ0 जोशी का इस्तीफा या नाटक

19 सितम्बर 03 को अयोध्या में विवादित ढांचा ढहाने के मामले में विशेष अदालत द्वारा आरोपित किये जाने पर केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री मुरली मनोहर जोशी ने इस्तीफा दे दिया. जोशी ने 18 सितम्बर को ही यह ऐलान कर दिया था कि यदि कोर्ट ने बाबरी ध्वंस मामले में उनके खिलाफ आरोप तय करने का आदेश दिया तो वह सरकार से इस्तीफा दे देंगे. उन्होंने ठीक वैसा ही किया.

पत्राकार वार्ता में उन्होंने कहा कि वे अपना इस्तीफा प्रधानमंत्री के पास भेज दिये है. अटल बिहारी वाजपेयी 13 दिन की विदेश यात्राा के दौरे पर है. इसलिए इस्तीफा पीएमओ भेजा गया. जोशी की उपप्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी के अलावा पार्टी अध्यक्ष वेकैंया नायडू से भी फोन पर बातचीत हुई. दोनों ने ही उन्हें इस्तीफा देने से मना कर दिया. लेकिन जोशी इस्तीफा न देने पर जोशी राजी न हुए. कोर्ट के आदेश पर उनका कहना है कि—मैंने आडवाणी जी को बधाई दे दी है. वे अदालत के फैसले पर कोई टिप्पणी नहीं करेंगे. इस मामले में अब प्रधानमंत्री को फैसला करना है. हालांकि भाजपा ने जोशी के इस्तीफे को गैरजरूरी बताया है. पार्टी ने उम्मीद जताई है कि प्रधानमंत्री उचित फैसला करेंगे. फैसला आने के फौरन बाद वेकैंया ने कहा कि पार्टी इस राय पर डटी है कि भाजपा के वरिष्ठ नेताओं ने 6 दिसम्बर को अयोध्या में उमड़ी भीड़ को बाबरी मस्जिद नहीं तोड़ने की अपील की थी.

उधर इस्तीफा देने के बाद अपने संसदीय क्षेत्रा में आने पर उनका गाजे बाजे के साथ भव्य स्वागत किया गया. तो दूसरी तरफ राजग के संयोजक व राजग सरकार में संकट में सक्रिय भूमिका अदा करने वाले रक्षा मंत्री जार्ज फर्नाडीज से डा0 जोशी से मिलकर अपना इस्तीफा वापस लेने को कहा है. भाजपा के प्रदेश कमेटियों से इस्तीफा वापस लेने की मांग की जा रही है. लेकिन कुछ भी हो डॉ0 मुरली मनोहर जोशी जो कभी भाजपा के उच्चस्थ नेताओं में गिने जाते थे. उस समय एक नारा चला करता था भाजपा के तीन धरोहर—अटल, आडवाणी और मुरली मनोहर. आज सत्ता में अपने को किनारे कसे जाने पर बेहद खफा है. उन्हें इसका मलाल है कि उन्हें किसी भी मामलें में तरजीह नहीं दी जाती है. यहां तक कि अपने संसदीय प्रदेश उत्तर प्रदेश के मामलों में भी नहीं. इस मौके का फायदा उठाकर अपनी हस्ती में कुछ इजाफा करना चाहते है. वे यह जताना चाहते है कि हम भी कुछ है. लेकिन अन्ततः वे अपना इस्तीफा वापस ले लेगें चाहे प्रधानमंत्री के कहने से हो चाहे किसी अन्य को. यह तो होना ही है लेकिन थोड़ा सब्र से काम लीजिए. एक तीर से दो शिकार जो करना है डॉ0 जोशी को.

मुलायम सिंह की तीसरी पारी कठोर या मुलायम

✍ जी.के.द्विवेदी

22 नवम्बर 1939 को इटावा जिले के सैफई गांव में साधारण किसान परिवार में जन्में मुलायम सिंह यादव पोस्ट–ग्रेजुएट की डिग्री आगरा विश्वविद्यालय से हासिल की. इसके बाद मैनपुरी के एक इंटर कॉलेज में लेक्चरर हो गए. सक्रिय छात्रा नेता मुलायम सिंह यादव डॉ0 मनोहर लोहिया से प्रभावित थे और लोहिया के आहवाहन पर नहर–शुल्क के मुद्दे पर आंदोलन में कूद पड़े व 15 साल की उम्र में जेल गएं. सोशलिस्ट पार्टी के टिकट पर जसवंतनगर सीट से पहली बार 1967 में विधायक बने. वह राज्य में इतनी कम उम्र में विधायक बनने वाले पहले व्यक्ति थे. वह 1974 और 1977 में राज्य विधान सभा के लिए चुने गए। 1977 में सहकारिता व पशुपालन मंत्री बने. मुलायम ने अनुसूचित जाति व जनजातियों के लिए सहकारिता संस्थानों में आरक्षण लागू किये. जनता दल सरकार में वे पहली बार 1989 में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री (दिसंबर 1989 से मई 1991) बने. उन्होंने 1992 में खुद की समाजवादी पार्टी का गठन किया. नई उभरती दलित शक्ति बहुजन पार्टी के सहयोग से दिसंबर 1993 में राज्य के दूसरी बार मुख्यमंत्री (दिसंबर 93 से जून 95) बने. बसपा के समर्थन खींच लेने से उनकी सरकार गिर गई. मई 1996 में उन्होंने पहली बार मैनपुरी से लोकसभा का चुनाव जीता. 1 जून 1996 को एच.डी. देवगौड़ा की सरकार में रक्षा मंत्री बने. मुलायम सिंह 1998 में प्रधानमंत्री इंद्र कुमारा गुजराल की यूनाइटेड फ्रंट सरकार में फिर रक्षा मंत्री बने. 29 अगस्त 03 को लगभग 10 साल के लम्बे अंतराल के बाद दिन शुक्रवार को तीसरी बार देश के सबसे बड़े सुबे के मुख्यमंत्री पद की शपथ ग्रहण की. यह पहली बार हुआ है कि मुख्यमंत्राी ने अकेले शपथ ली हो.

उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में दो–तीन तक तेज नाटकीय राजनीतिक घटनाक्रम के बाद अंततः महामहिम ने जन अपेक्षाओं के अनुरूप सराहनीय फैसला किया. विधानसभा में सबसे बड़े दल–समाजवादी पार्टी के नेता मुलायम सिंह यादव को सरकार बनाने का निमंत्राण देकर राज्यपाल विष्णुकांत शास्त्राी ने प्रदेश में वैकल्पिक सरकार के गठन का मार्ग प्रशस्त कर दिया. अब प्रदेश में असमंजस और राजनीतिक अनिश्चतता के बादल छंट गए हैं. मुलायम तीसरी बार प्रदेश की बागडोर संभाले. पिछले अनुभवों से आशंकित जनता को इस बार महामहिम से इसी सकारात्मक रवैये की उम्मीद थी. भाजपा और बसपा के बीच रिश्ता टूटने के बाद प्रदेश का राजनीतिक परिदृश्य दरअसल एक बार फिर पंद्रह महीने पहले के उसी मोड़ पर जाकर ठिठक गया था, जब राज्यपाल महोदय ने मुलायम का दावा मंजूर नहीं किया था. चूंकि सदन में किसी दल के पास सरकार बनाने का जादुई आंकड़ा नही था, लिहाजा राज्यपाल ने विधानसभा निलंबित कर राज्य को राष्ट्रपति शासन के हवाले कर दिया था. राज्य में लोकतंत्रा तब लौटा, जब बसपा और भाजपा के बीच नितांत बेमेल गठबंधन हुआ. यह असहज गठजोड़ टूटने के बाद खंडित जनादेश वाली विधानसभा की शक्ल तो वहीं है, लेकिन परिस्थितियों में बुनियादी फर्क यह है कि इस बार सभी विपक्षी दल मुलायम के साथ एकजुटता से खड़े हैं.

पिछली बार कांग्रेस ने मुलायम का समर्थन करने से इनकार कर दिया था और अजित सिंह भाजपा के साथ थे. एक दिलचस्प स्थिति यह है कि भाजपा विधायक दल के नेता लालजी टंडन ने राज्यपाल से मिलकर बता दिया था कि नई सरकार के गठन में इस बार भाजपा रोड़ा नहीं बनेगी और मुलायम ने भाजपा के विधायक न तोड़ने की सार्वजनिक घोषणा कर भाजपा के शीर्ष नेतृत्व की आशंकाओं को दूर कर दिया. इस बदले राजनीतिक परिदृश्य में महामहीम को निस्संदह मुलायम की ताजपोशी का विकल्प ही चुनना था. उन्होंने प्रदेश की लोकतांत्रिाक आकांक्षा का सम्मान किया. अब जिम्मेदारियों का निर्वाह मुलायम को करना है. जनता और सभी विपक्षी दलों की ढेर सारी उम्मीदें

xkW/kh thdks J)katfy\

1. गॉधी जी अहिंसा का उपदेश केवल हिन्दुओं के लिए देते थे. मुस्लिम कट्टरपंथियों एवं गुडों का प्रतिकार न करने की सलाह वे हिन्दुओं को देते रहते थे.

2. 6 मई 1946 को समाजवादी कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए गॉधी जी ने कहा था–"तब हम अपनी अहिंसा के डेरे लीग की हिंसा के क्षेत्रा में भी गाड़ सकेंगे। हम बगैर उनका खून बहाए अपने निर्दोष रक्त की भेंट देकर लींग के साथ समझौता कर सकेंगे और हम सफल होंगे."

3. गॉधी जी ने जनरल डायर पर मुकदमा चलाने के आन्दोलन को समर्थन देने से इंकार कर दिया था. कारण ऐसे मानव–हत्यारे डायर को दंड देने में भी गॉधी को हिंसा की बू आती थी.

4. अगर गॉधी हस्तक्षेप करते तो भगतसिंह और उसके साथियों को फॉसी से बचाया जा सकता था. पर गॉूधी ने इन वीर शहींदों को हिंसा का दोषी माना.

5. गॉधी की दृष्टि में सैनिक होना पाप था. गॉधी जी ने शिवाजी आदि को पथभ्रष्ट देशभक्त कहा था. गॉधी जी ने कट्टर मुसलमानों के तुष्टीकरण के लिए भारत के राष्ट्रीय वीरों महाराणा प्रताप, छत्रापति शिवाजी और गुरूगोविन्द सिंह को पथभ्रष्ट देशभक्त कहा. (यंग इंडिया, अप्रैल,9 1925)

6. अक्टूबर 1938 में निज़ाम के अत्याचारी शासन के विरूद्ध सिक्खों और हिन्दूओं के संघर्ष को समर्थन करने से गॉधी जी ने यह कहकर इनकार कर दिया कि वे महामहिम निज़ाम को परेशान नहीं करना चाहते.

7. मोपलों के बर्बर हत्याकाण्ड, विनाश–लीला, अग्निकांड और दानवी क्रुरता की निंदा करने के बजाए गॉधी जी ने उनका वर्णन 'खुदा के बहादुर बंदो' रूप में किया जो अपने मज़हब के लिए लड़ रहे थे. (धनंजय कीरः वीर सावर कर, पृष्ठ 161)

8. गॉधीजी ने स्वामी श्रद्धानन्द की हत्या की निंदा से इनकार करते हुए हत्यारे का पक्ष लिया और मुस्लिम सम्प्रदाय से क्षमा याचना की (दी टाइम्स ऑफ इंडिया, अंग्रेजी, दैनिक, बाम्बे, नवम्बर 30,1927)

9. बहुत कम लोगों को पता होगा कि गॉधी जी ने अंग्रेजो को 'भारत छोड़ो कहा था पर भारत में अंग्रेजी सेना बनाए रखने को सहमत हो गए थे. (वीर सावरकरः ऐतिहासिक वक्तव्य भविष्य–सूचक चेतावनियॉ पृष्ठ 103)

10. जब मुस्लिम लीग के मतांध सदस्यों ने पाकिस्तान को प्राप्त करने के लिए शक्ति–प्रयोग की धमकी दी तो गॉधी जी ने उनसे प्रार्थना की कि वे मुसलमानों द्वारा शासित होने के तैयार हैं क्योंकि मुस्लिम राज भी तो भारतीय राज ही होगा। (हरिजन, 23, 1940)

(आर्य जगत साप्ताहिक 31.08. 2003 से साभार)

उनसे हैं. क्या वह उन पर खरे उतर पाएंगे? प्रदेश के वर्तमान राजनीतिक–सामाजिक समीकरणों की सच्चाई से मुलायम अच्छी तरह वाकिफ हैं. विपरीत राजनीतिक चिंतन धारा के साथियों को एकजुट रखकर संतुलन साधना यकीनन एक कठिन चुनौती है, लेकिन मुलायम जैसे अनुभवी राजनीतिज्ञ से अपेक्षा की ही जानी चाहिए कि अस्थिरता के लिए अभिशप्त इस प्रदेश को वह इस बार एक स्थिर गठबंधन सरकार देंगे. मंत्रिमंडल का आकार, विभागों का बंटवांरा, ये सब तात्कालिक मसले हैं, असल चुनौती समस्याग्रस्त प्रदेश को सुशासन प्रदान करना और उसे विकास की पटरी पर फिर से ला खड़ा करना है.

आवश्यकता है

मासिक पत्रिका **विश्व स्नेह समाज** हेतु उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल, छत्तीसगढ़, झारखंड, मध्य प्रदेश, बिहार, दिल्ली एवं राजस्थान में

0 संवाददाता 0 विज्ञापन एजेंट

0 विज्ञापन एजेंट 0 ब्यूरो 0विक्रय एजेंट

हमें टिकट लगें जबाबी लिफाफे के साथ लिखेंअथवा सम्पादकीय कार्यालय पर मिलें:

एल.आई.जी.–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद 0532:3155949

ठाकुर श्रीनाथ सिंहः एक जीवन्त पत्रकार

मधुकर मिश्र

साहित्य वारिधि ठाकुर श्रीनाथ सिंह जी हिन्दी के प्रथम श्रेणी के पत्राकार और लेखक के रूप में प्रतिष्ठित रहे हैं. हिन्दी भाषा और आन्दोलन को उनका सदैव सक्रिय योग मिलता रहा है. उनको निर्भीक वाणी और लेखनी राष्ट्र भारती की हित–चिन्तना के लिए सदैव सजग रही है.

श्रीनाथसिंह जी का जन्म 1 अक्टूबर, 1901 ई0 को ग्राम मानपुर, इलाहाबाद में हुआ था. उनके पिता ठाकुर कामता सिंह, अध्यापक और किसान नेता थे. वे महामना मालवीयजी के कृपापात्रा थे. वे अपने पुत्रा को लेकर मालवीय जी के चरणों में घंटो बैठ कर देश की चर्चा सुनते रहते थे. मालावीय जी ने एक दिन बेटे को आर्शीवाद दिया–"बेटा, स्वदेशी का व्रत लो, देश में बना वस्त्रा पहनो और देश में बनी चीजों को काम में लाओ." यह भारतीय राष्ट्रीय जागरण का 1909 प्रथम युग था.

गॉव मे 4 कक्षा की पढाई समाप्त कर व विद्या मंदिर, इलाहाबाद, जो उस समय एक राष्ट्रीय हाई स्कूल था और जिसके संचालक स्वर्गीय मालवीय जी तथा स्व0 नेहरू जी थे, में पढने लगे. एक दिन माननीय लोकमान्य तिलक स्कूल में पधारे. वे कक्षा में गए और बालक श्रीनाथ सिंह की मेज के पास खडे हो, उनकी पीठ थपथपाने लगे. कारण यह था कि सब बालक विदेशी होल्डरों से लिख रहे थे और यह स्वदेशी का पुजारी मालवीय जी के उपदेश कंठस्थ कर सरकण्डे के कलम से लिख रहा था. इसका प्रभाव स्कूल के अन्य छात्रों पर पड़ा और सब ने उस दिन स्वदेशी का व्रत लिया.

1920–21 की राष्ट्रीय ऑधी आई. गॉधी जी ने 'आनन्द भवन' मे छात्रों को कॉलेज छोड़ने को कहा. उनकी आज्ञानुसार बी0 ए0 द्वितीय वर्ष के इस छात्रा ने कायस्थ पाठशाला डिग्री कॉलेज छोड़ दिया और

ठाकुर श्रीनाथ सिंह का जीवन साहित्य और राष्ट्र के प्रति समर्पित था. उनका पत्राकार का रूप सदैव निर्भीकता का रहा. ग्रम्य जीवन की समस्याओं से तादात्म्य स्थापित करके लोक जीवन के सुख दुःख में भागीदार बनना उनका स्वभाव था.

पूर्ण रूप से राजनैतिक आन्दोलन में पड़ गया. सन् 1926 में जब वे जिला कॉग्रेस के सचिव चुने गये तो स्वर्गीय त्यागमूर्ति मोतीलाल नेहरू ने 'देशबन्धु' दैनिक पत्रा के संपादन का भार सौंपा. ठाकुर साहब मोतीलाल जी के संस्मरण, उनकी समय की पाबन्दी, अनुशासन तथा नेहरू परिवार की अनेक रोचक बातें सुनाया करते थें. नेहरू परिवार के निकट रहने पर वे अखिल भारतीय कांग्रेस के कानपुर अधिवेशन में इलाहाबाद के डेलिगेट चुने जाने पर भाग लेने गए. वे 1930–31 में कांग्रेस के प्रचार अधिकारी स्व0 पं0 जवाहर लाल नेहरू द्वारा चुने गए. इसी समय वे दैनिक तथा साप्ताहिक 'अभ्युदय' का संपादन भी करते रहे। जब कमला नेहरू जी 1930 में गिरफ्तारा हुई तो वे शहर के 'डिक्टेटर' नियुक्त हुए और पुलिस के द्वारा पकड़े गये. वे बड़े आतंक के दिन थे. जेल से छूटने पर पिता ने अपने साथ रखने से इंकार कर दिया. पत्नी का भार और बेकारी के दिन. वे परिस्थितियों से विचलित नही हुए और इंडियन प्रेस में नौकरी कर ली. सन् 1933 से 1947 तक सरस्वती, बालसखा, देशदूत तथा पत्रा–पत्रिकाओं का संपादन करते रहे. अपनी लेखनी से यथार्थ तथा स्पष्ट आलोचना लिख कर उन्होंने साहित्य जगत में हलचल मचा दी और उस काल में हिन्दी आलोचकों के बीच उनका व्यक्तित्व उभरता चला गया.

1936 में हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन इन्दौर में गॉधी जी की अध्यक्षता में हुआ. गॉधी जी इनसे प्रभावित हुए और इनको प्रबन्ध मंत्री चुना गया. तब से वे गॉधी जी, राजेन्द्र बाबू तथा कांग्रेस के शीर्ष नेताओं के समीप रहे और उनसे उनका जीवन बहुत प्रभावित हुआ. 1938 में जब उत्तर प्रदेश में कांग्रेस मंत्रिमंडल आया तो स्व0 गोविन्द बल्लभ पंत के आग्रह पर इन्होंने 'हल' का संपादन स्वीकार किया और लगभग 2 वर्ष वहॉ रहे. मंत्रिमंडल भंग होने पर 'दीदी' मासिक पत्रिका महिलाओं के लिए प्रयाग से निकाली और इस पत्रिका की धूम मच गई. पत्रिका के लिए आपने विदेशों की समाज सेवी महिलाओं की धूम मच गई. पत्रिका के लिए आपने विदेशों की समाज सेवी महिलाओं से संपर्क स्थापित कर, उनसे लेख मॅगवा कर प्रकाशित किए.

उत्तर प्रदेश शासन के 'प्रेस कन्सल्टेटिव' तथा 'प्रेस इंडस्ट्री इंक्वायरी कमेटी' के सदस्य, आल इंडिया श्रमजीवी पत्राकार सम्मेलन के उपाध्यक्ष, इलाहाबाद पत्राकार संघ के अध्यक्ष होने के साथ–साथ सामाजिक और राजनैतिक सभी संस्थाओं में आप सक्रिय भाग लेते रहे. वे सदा साहित्यकार रहे. नये लेखकों तथा पत्राकारों पर विपत्तियॉ

पड़ी तो वे सदा इनके सत्परामर्श पर काम करते रहे. वे कट्ट गाँधीवादी थे. इनके विचारों की झलक इनके उपन्यासों उलझन, जागरण, प्रजामंडल, कवि और क्रांतिकारी, सोमनाथ, झाँसी की रानी आदि में मिलती है. बच्चों के लिए काव्य लिखने में सिद्धहस्त थे. बाल–कवितावली, आविष्कारों की कथा, पृथ्वी की कहानी, मीठी तानें, गरूड़ कन्या, दस कथाएँ, दो कुबड़े आदि एक दरजन से अधिक पुस्तकें बच्चों का मन मोह लेती हैं. स्वर्गीय रामनरेश त्रिपाठी ने सन् 1936 ई0 में प्रकाशित 'कविता कौमुदी' में ठाकुर साहब को बच्चों का एक मात्रा प्रतिनिधि लेखक, माना तथा हिन्दी के विशिष्ट कविजनों में उनकी गिनती की और एक पृथक अध्याय में उनकी कविताओं की समीक्षा की. उनका हृदय बच्चों की भांति सरल और निश्छल था. उनमें मानवता कूट–कूट कर भरी थी, लेकिन सिद्धातों में वे बज्र की भाँति कठोर चोंटें करने में नहीं चूकते थे. इससे कई उच्च्य कोटि के साहित्यकार उनसे रूष्ट होते गए.

श्रीनाथ सिंह जी को अपना नगर प्रयाग प्यारा था. वे इस धरती को भूल नहीं पाते. स्वर्गीय नेहरू तथा शास्त्री जी के आदेश पर 1956–57 में दिल्ली अखिल भारतीय कॉंग्रेस कमेटी के प्रचार–चुनाव अधिकारी चुने गए. श्री ढेवर जी के नेतृत्व में कार्य किया, पर दिल्ली का वैभव उनको मोह नहीं सका. प्रयाग लौट आये. फिर स्वर्गीय गोविन्द बल्लभ पंत तथा स्वर्गीय सरदार पटेल के आदेश पर "सम्पूर्ण गाँधी वाङ्मय" के हिन्दी संपादक नियुक्त किए गए. वह उच्च पद भी उनको नहीं भाया और कुछ साल बाद त्यागपत्रा देकर अपनी जन्म भूमि प्रयाग लौट आए.

ठाकुर श्रीनाथ सिंह का जीवन साहित्य और राष्ट्र के प्रति समर्पित था. उनका पत्राकार का रूप सदैव निर्भीकता का रहा. ग्रम्य जीवन की समस्याओं से तादात्म्य स्थापित करके लोक जीवन के सुख दुःख में भागीदार बनना उनका स्वभाव था.

वे हिन्दी साहित्य सम्मेलन के दो बार सभापति रहे. 'श्रमजीवी पत्राकार और लेखक संघ' की अध्यक्षता के समय उन्होंने उस वर्ग के लिए जुझारू लड़ाई लड़ी. उत्तर प्रदेश शासन के प्रेस इंडस्ट्री इन्कवायरी समिति एवं प्रेस कन्सलटेटिव समिति के सदस्य के रूप में पंत–मंत्रिमंडल को उस समय कई उपयोगी सुझाव देकर छोटे पत्राकारों और प्रेसों के हित की रक्षा की. उनके प्रेमचन्द्र, प्रसाद, मैथिलीशरण गुप्त, प्रसाद, अजमेरी, माखनलाल चतुर्वेदी, के0एम0मुंशी 1900 से 1957 के प्रमुख साहित्यकारों की रचनाओं पर लगभग 200 निबंध हैं और संस्मरण, भेंट वार्ता, सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक आदि लगभग 300 निबन्धों का स्वरूप पूर्ण साहित्यिक है. हॉकी के जादूगर ध्यानचंद, संत निहाल सिंह, जवाहर लाल नेहरू, महात्मा गाँधी, सरदार पटेल, मौलाना आजाद, राजेन्द्र प्रसाद, सुभाषचंद्रबोस, चितरंजन दास, लेडी रमन, विजय लक्ष्मी पंडित, रविन्द्र नाथ, उदय शंकर, अमला नन्दी, घनश्यामदास बिड़ला आदि की भेंट वार्ता के साथ नई साहित्यिक परम्परा शुरू करने का श्रेय उनको है.

'बाल–सखा' 13 साल, 'सरस्वती' 14 साल, 'दीदी' 19 साल संपादन किया; कविताएँ, कहानी–संग्रह, उपन्यास, निबन्धों आदि के लगभग 45 पुस्तकों से साहित्य का भण्डार भरा. उनकी पुस्तकों के अनुवाद 1934 से निरंतर उर्दू, गुजराती, मराठी में प्रकाशित हुए. उनका पत्राकार और साहित्यकार का अपनी पीढ़ी का एक अखिल भारतीय व्यक्तित्व रहा है. हिन्दी ही नहीं इतर भाषाई विद्वान आज भी उनका नाम बड़े सम्मान के साथ लेते है.

ठाकुर श्रीनाथ सिंह ने मौलिक साहित्य लिखा. वे भारतीय समाज और मानव से जुड़े रहे. यही कारण है कि उनके जागरण, उलझन, राधा रानी, नयनतारा, सोमनाथ, अपराछत, प्रभावती, चूड़िया आदि उपन्यास और कहानी संग्रह हिन्दी कथा साहित्य के ऐतिहासिक दस्तावेज माने गये.

भारतीय परम्परा की दादी–नानी की कहानियों और लोरियों को नया रूप देकर उन्होंने आधुनिक बाल साहित्य का हिन्दी में श्रीगणेश किया. खेलघर, बाल कविताएँ, अनोखी यात्राएँ, परिदेश, एकाकिनी, तरूण तपस्वी, पृथ्वी की कहानी, गाँधी जी की जीवनी आदि गद्य–पद्य में लिखकर बाल साहित्य की परंपरा चलाई है.

आलोचना के क्षेत्रा में उन्होंने प्रतिष्ठित साहित्यकारों की चाकरी मात्रा न कर, भारतीय परिवेश, देशज दर्शन और परंपराओं के अधार की कसौटी पर उनकों आंक कर स्पष्ट और सही मत दिया. वे कभी यश और मान–सम्मान के भूखे नहीं रहे. एक सही मानवीय सदाचार के आधार पर जीवन यात्रा की पगडंडिया लाँघी. कई मंजिलों पर सघर्ष के तूफान उठे, पर टूटे नहीं; गरीबी को वरदान सा स्वीकारा.

उनकी जीवन के प्रति सच्चाई और निष्ठा; मौलिक साहित्य के प्रति भारतीय रूझान एवं आस्था और अक्खड़ व्यक्तित्व के कारण पाठक के वे निकट आये; पर संभ्रात वर्ग के साहित्यकारों के अभिन्न होने पर भी उनके प्रभाव से अछूते रहे है. उनकी प्रतिभा का विकास, ग्रामीण जन–जन की निकटता से उभरा और धरती की माटी से प्राणवान हुआ है. सन् 1900 ई0 से सन् 1980 तक के भारतीय समाज को उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से सँवारा. अंग्रेजी साहित्य के विद्वान होने पर भी उसके प्रभाव से दूर रहे और भारतीय प्राचीन साहित्य की सबल धारा से सदा जुड़े रहे.

धारावाहिक उपन्यास

दिल का पैगाम

_गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी_

पूर्व कथा

अनिल व सावन बहुत ही घनिष्ठ मित्र है। अनिल की दोस्ती साथ पढ़ने वाली, लड़की अनु से होती है, तीनों कम्प्यूटर कोर्स करते है। अनिल और अनु की दोस्ती प्रेम का रुप ले लेती है, परन्तु एक–दूसरे का पता मालुम न होने के कारण दूरियां बन जाती है। सावन किसी तरह से अनु के घर का पता ढूढता है। वहीं सावन को मोना नामक एक लड़की मिलती है। दो दिन की मुलाकात में ही दोनों के बीच प्रेम पनप जाता है। वे अनिल की बुआ की लड़की बबली के द्वारा मिलते है। सावन, अनिल, अनु और मोना कोर्ट मैरिज करते है। सावन अनु और अनिल को अपने दोस्त के पास भेज देता है और स्वयं अनिल के घर अपने जन्मदिन की पार्टी में सरीक होने उसके घर जाता है। सावन, अनु के घर जाता है उसकी मम्मी उसे जान से मारने को कहती है लेकिन सावन की चतुराई से वे शांत हो जाती है। सावन प्रेम विवाह पर एक सम्मेलन आयोजित करवाता है **और अब आगे....**

14दहवीं किस्त

भारतीय समाज के लड़के–लड़कियों के बीच में निजी एकांकी प्रेम को बढ़ावा देने वाले परिवेश का फैलाव जैसे–जैसे हो रहा है, वैसे–वैसे उसे स्थापित और पारंपरिक प्रेम संबंधी मूल्यों और मान्यताओं के निषेध के रूप में लिया जा रहा है. प्रेम की समाज द्वारा उत्कृष्ट भाव भूमि पर खड़े होकर ही लड़के–लड़की अपने इस संबंध को आगे बढ़ाते हैं, इसे गलत न समझते हुए वे उचित समझते हैं और अन्ततः उसे विवाह के रूप में स्थायी बनाने की चेष्ठा करते हैं. लेकिन जैसे ही इनकी यह चेष्टा सार्वजनिक होती है वैसे ही उन्हें परिवार के विरोध का सामना करना पड़ता है. जाहिर है कि यह विरोध परिवार द्वारा मान्य उन मर्यादाओं वर्जनाओं, और नैतिक विश्वासों के आधार पर होता है. जो उस परिवार के परम्परा में शामिल है. इस विरोधाभास का दूसरा पहलू यह है कि भारतीय कानून बालिंग लड़के–लड़कियों को यह अधिकार प्रदान करता है जो अधिकतर परिवार देना नहीं चाहते. यानी अगर लड़की की उम्र 18 वर्ष से अधिक है तो वह अपनी मर्जी से अपने विवाह संबंधी मामले में स्वतंत्र निर्णय ले सकती है. यहॉ जाति, धर्म या शहर गॉव का एक होना या अलग होना कोई मायने नहीं रखता. 18 वर्ष के ऊपर की आयु की

> lkou¼vius fopkj j[krs gq,½&vkt lcls egRoiw.kZ lkoy gS orZeku laanHkZ esa efgykvksa dh lkekftd fLFkfr] efgykvksa dh f'k{kk] jkstxkj o thou dks lkFkh {ks=ksa esa tc rd leku :i ls vkxs c<+us dk volj ugha feysxk] rc rd os dqhaa fuHkZjrk dk thou thus ij foo'k jgsaxh vkSj os vius Hkfo"; vkSj ftUnxh ds dkjs esa fu.kZ; ysus ds fy, Lora= ugha gksa ik,axh-

किसी भी लड़की को यह अधिकार है कि वह अपने गॉव के भीतर या बाहर अपनी ही जाति या किसी अन्य जाति के लड़के से शादी कर सकती है. लेकिन जब वह सचमुच ऐसा करना चाहती है तो सबसे पहले उसका परिवार ही उसके इस कानूनी अधिकार को अमान्य कर देता है.

परिवार का विरोध भी वस्तुतः सामाजिक विरोध होता है. इस विरोध के रूप में दर्ज होता है. इस विरोध के निहितार्थ और भी अधिक विकृत होते हैं. परिवार का यह विरोध लड़के–लड़कियों को एक–दूसरे के प्रति बेइमान, शंकालु और कहीं–कहीं तो एक दूसरे का शत्रु भी बना देता है. अगर एक दूसरे का शत्रु नहीं बना पाता तो उन्हें स्वयं अपना ही शत्रु बना देता है. लेकिन जब उन्हें पारिवारिक विरोध के कारण अपना यह संबंध तोड़ना पड़ता है और परिवार की मर्जी के अनुसार दूसरी जगह शादी करनी पड़ती है तो इसका मतलब यही होता है कि लड़का आज अपनी पत्नी से अपने पूर्व प्रेम संवंध को छिपाए। इस तरह दोनों को ही कई स्तरो पर बेईमानी आडंबर का जीवन जीने के लिए विवश होना पड़ता है। इस तरह भारतीय समाज में जाति, क्षेत्र समाज, धर्म आदि से जुड़ी नैतिक वैवाहिक मान्यताओं, कानून तथा दो व्यक्तियों के प्रेम संबंधी आदर्श अधिकार भाव के बीच गहरे टकराव की स्थितियों ने परम्परागत नैतिक मूल्यों को मौजूदा संदर्भ में घोर अनैतिक बना डाला है। इसलिए कि जो मान्यताएं और जो परम्पराएं व्यक्ति को ईमानदार न रहने दें उसके निजी मौलिक अधिकारों का हनन करें, उसके अंदर परिवार विरोधी होने का हीन भाव पैदा करें, उसे आजीवन छदम जीवन जीने के लिए बाध्य करें या उसे देह के स्तर पर किसी और के साथ और मन

के स्तर पर किसी और के साथ जुड़े रहने के लिए विवश करे, उन्हें किसी तरह से नैतिक नहीं कहा जा सकता। दरअसल पारिवारिक नैतिक सोच के पीछे मनुष्य की मूल स्वाभाविक प्रवृतियों को न समझ पाने, परम्परागत और अवैज्ञानिक मान्यताओं से भयभीत रहने, कानून के प्रति आस्था न रख पाने या कानून को सामाजिक मान्यता का स्थान न दे पाने, परिवार के बालिग सदस्यों की सोच पर भरोसा न मान पाने जैसी नकारात्मक प्रवृत्तियॉ निहित हैं। इन प्रवृत्तियों के तमाम कानूनी प्रावधानों के बावजूद मजबूती से बने रहने के अनेक सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, क्षेत्रिय कारण हैं जिनके विश्लेषण की जरूरत है. लेकिन जरूरत यह है कि समाज को अधिक छूट न दी जाए. ताकि वह आत्म साक्षात्कार यौन–सम्बन्धों की या प्रेम–संबंधों के प्राकृतिक यथार्थ को उसे यथावत स्वीकार कर सके. जब तक यह स्वीकार समाज में पैदा नहीं होता प्रेम संबंधों की परिणति कहीं जबरिया संबंध– विच्छेद में, कहीं हत्या में तो कहीं आत्महत्या में होती रहेगी.

अंत में मैं सावन के इस कदम की भूरी–भूरी प्रशंसा करते हुए आशा करता हूॅ और आप लोगों से यह अनुरोध करता हूॅ कि आप लोग सावन के इस कार्य में मदद करेंगे.

मि0 अजय अग्निहोत्रीः– जैसा कि आपलोगों ने अभी रजिस्टार साहब को सुना. मैं तो यही चाहता हूॅ कि गर्जियन लड़के–लडकियों को अपनी अनुभवी ऑखों से परखकर उन्हें अपनी रजामंदी दे देनी चाहिए. जबकि व्यवहार में प्रेम के प्रति या प्रेम–विवाह के प्रति आम लोगों में प्रायः गलत धारणाएं बन चुकी हैं.उनका मानना है कि केवल बुरे या आचरणहीन लोग ही प्रेम करते हैं. सचरित्र लड़के–लड़कियों से प्रेम करने की अपेक्षा नहीं रखी जा सकती.दूसरी बात, समाज में बदलाव बहुत ही जरूरी है. इस बदलाव के लिए सरकारी कानून तो चूक गये, क्योंकि वे किताबी अधिक हैं स्वस्थ समाज का कोई रास्ता

या नजरिया उनके प्राविधानों में नहीं है. लोग भौतिकवादी रूप से सम्पन्न हुए प्रगतिशील नहीं हो पाए हैं.

तीसरी बात पॉप संगीत सुनने या ड्राइंग–रूप जाति, रंग, धर्म पर सिर्फ नकात्मक थिंकिग रखन का अर्थ यह नहीं लिया जाना चाहिए हमलोग, हमारा समाज हर लिहाज से उदार हो गया है. संविधान में बेशक इस विभेद की कोई व्यवस्था न हो लेकिन आज भी एक को चमार कहकर लांछित किया जाता है, तो दूसरे को नीच की संज्ञा दी जाती है.

चौथी बात है जातीय प्रेम विवाह को सामाजिक स्वीकृति न मिलने के सवाल पर मेरा मानना है कि भारतीय मॉ–बाप अपनी औलाद को औलाद कम और 'प्रॉपर्टी' ज्यादा मानते हैं.और प्रॉपर्टी की तरह उन्हें बेजान समझकर अपना हक दर्शाते हैं. दरअसल यूॅ कहना चाहिए कि ये जन्म देने का मुआवजा मांगते हैं.

अंत में मैं यह बता देना चाहुॅगा कि मैनें भी खुद उपरोक्त परेशानियों को झेलते हुए प्रेम–विवाह किया था और आज हम पन्द्रह साल व्यतीत हो जाने के बावजूद सफलतम जीवन व्यतीत कर रहे हैं. आप लोग भी आगे आओ और इस प्रथा को आगे बढ़ाओ.

श्रीमति सी0पी0 वामनः– (सम्बोधित करते हुए) सर्वप्रथम मैं अपने छात्र सावन को, जो अपने दस–वर्ष मेरे संरक्षकत्व में गुजारा है, मैं उसकी हास्टल इंचार्ज थी, को धन्यवाद दूॅगी. जिसने एक ज्वलंत मुद्दे पर सम्मेलन आयोजित किया है. मैं स्वयं क्रिश्चियन हुॅ और मेरे पति कट्टर हिन्दू ब्राहमण. हमारा प्रेम विवाह हुआ था लेकिन बच्ची के पैदा होने पर ही यह सवाल उठ खड़ा हुआ कि बच्ची आखिर किस धर्म को अपनाए. इस मसले पर हम दोनों के बीच एक तनाव की रेखा

खिंचती नजर आयी. मेरा कहना था, बच्ची को मेरे धर्म की पहचान मिलनी चाहिए. परन्तु मेरे पति का तर्क था, चूॅंकि कानूनन बच्चा पिता के धर्म को अपनाता है, अतः यहॉ भी यही होना चाहिए.भारतीय परंपरा के अनुसार बच्चे को पिता का नाम और धर्म दिया जाता है. चूॅंकि उन्होंने मुझसे शादी को लेकर काफी कम्प्रोमाइज किया था, इसलिए मैं भी उनकी बात मान गयी. कभी–कभी एहसास होता है कि मुझे अपने कहने पर डटे रहना चाहिए था.लेकिन शायद मैं भी उसी भ्रम का शिकार थी, जिसका शिकार महिलाएॅं अक्सर हो जाती हैं या बना दी जाती हैं, अपने ही लोगों द्वारा. यह भ्रम है आखिर परिवार, यह समाज मुझे शादी की वजह से ही मिला है, पति की इच्छा के विरूद्ध जाकर मैं उसे खो दूॅंगी.

उस समय अपने खिलाफ कदम उठाकर मैनें खुद ही स्वयं से सबसे बड़ी दुश्मनी निभायी थी। इस दुश्मनी के मूल में मेरे अपने मम्मी पापा थे.

मैं महसूस करती हूॅं कि दो ऐसे व्यक्तियों का आपसी संबंध जो एक दूसरे को बहुत अच्छी तरह जानते हैं, एक–दूसरे की परवाह करते हैं, एक–दूसरे के बारें में गंभीर रूप से सोचते हैं स्वभावतः सुदृढ़ होगा. ऐसे व्यक्ति सामाजिक बंधनों में नहीं आतें लेकिन उनके बीच बने संबंध की अहमियत किसी मंदिर, मस्जिद या चर्च विवाह से कम नहीं होती.

प्रेम विवाह को बदनाम करने में मीडिया की मुख्य भूमिका होती है. मीडिया चूॅंकि हमेशा चीजों को ग्लैमराइज करके पेश करने में विश्वास रखता हैं. इसलिए वह प्रायः प्रेम–प्रसंगों की असफलताओं या उनके विवादपूर्ण मामलों को ही ज्यादा प्रमुखता से पेश करता है.सफल प्रेम को कभी मुद्दा नहीं बनाया जाता. प्रेम संबंधों पर तीव्र विवाद उठाने के पीछे भी मीडिया की ही अहम किन्तु नकारात्मक भूमिका होती है.

दूसरी मुख्य बात यह है कि अंग्रेजों के भारत में आने से पहले भारत में छोटी–छोटी रियासतें थीं औरतें घर की चाहरदीवारी तक ही सीमित रहती थीं. जर, जोरू और जमीन पर पुरूषों का अधिकार था. गॉवों में नाई और पंडित जी द्वारा सगाई पक्की करके आने की प्रथा थी.शादी से पहले लड़का, लड़की एक दूसरे को देख भी नहीं पाते थे अर्थात शादी के बाद ही उनका प्यार शुरू होता था. गरीब मॉ बाप के लिए लड़की की शादी काफी मुश्किल थी.कई जगहों पर मॉ बाप अपनी नवजात बच्चियों की हत्या कर देते थे. शादी के बाद भी दिन की रोशनी में अपने पति का मुॅंह देखे बिना औरत के कई–कई साल गुजर जाते थे. इन संकीर्ण विचार धाराओं से तो आज का समाज अति उत्तम है. अंत में मैं आप लोगों से दरख्वास्त करूॅंगी कि आप लोग प्रेम–विवाह में अड़चन न डाले जिसकी हमारा कानून भी मान्यता देता है. जब सभी इस राह पर चलेंगे तो समाज का चेहरा खुद व खुद बेनकाब हो जाएगा.

सावन (अपने विचार रखते हुए)– आज सबसे महत्वपूर्ण सवाल है वर्तमान संदर्भ में महिलाओं की सामाजिक स्थिति, महिलाओं की शिक्षा, रोजगार व जीवन के सभी क्षेत्रों में जब तक समान रूप से आगे बढ़ने का अवसर नहीं मिलेगा, तब तक वे कहीं निर्भरता का जीवन जीने पर विवश रहेगीं और वे अपने भविष्य और जिन्दगी के बारे में निर्णय लेने के लिए स्वतंत्र नहीं हो पाएंगी. इसके अतिरिक्त यह भी जरूरी है कि कानून और उन्हें लागू करने वाली मशीनरी, अफसरशाही और प्रचार–प्रसार माध्यमों को उनकी जिम्मेदारी के लिए जबाब देह बनाए जाए. जरूरत इस बात की भी है कि महिलाएं स्वयं भी अपने इन अधिकारों के लिए संघर्ष करें.

प्रेम संबधों के विवादस्पद मामले दिन–प्रतिदिन अखबारों में पढ़ने को मिलते रहते हैं। इन मामलों में बड़ी संख्या प्रेमी वयस्क लड़के–लड़कियों की होती है जो कि एक दूसरे से शादी करना चाहते है, परन्तु समाज में जात–पात के बंधनों की वजह से गॉव अथवा शहरों से दूर चले जाते हैं. ऐसी घटनाओं में आमतौर पर अमुक लड़के द्वारा अमुक लड़की को भगाकर ले जाना अथवा दोनों को भाग जाना करार दिया जाता है.अदालत व मंदिरों वगैरह में शादी सम्पन्न हो जाने अथवा उससे पहले ही आमतौर पर उन्हें पकड़ लिया जाता है. नतीजा दुःखद ही देखने को मिलता है. समाज के ठेकेदार यहॉ तक की माता पिता भी अपने खानदान और समाज की तथाकथित इज्जत आबरू की खातिर अपने ही बच्चों की हत्याएं तक कर देते है. इन विवादो में

लेखक / लेखिकाओं के लिए

1.काग़ज के सिर्फ एक ओर पर्याप्त हाशिया छोड़कर सुपाठय अक्षरों में लिखी अथवा टाइप की हुई रंचनाएॅं भेजें।

2.रचना के साथ पर्याप्त टिकट लगा, लेखक का पता लिखा लिफाफा आना चाहिए। इसके अभाव में, हम रचना से संबंधित किसी भी बात का उत्तर नहीं देंगे।

3. रचना के प्रथम पृष्ठ पर लेखक का पूरा नाम और अन्त में लेखक का पूरा पता अंकित होना चाहिए।

4. कोई भी रचना लगभग पन्द्रह सौ शब्दों से अधिक की न भेजें। हम लेखकों फिलहॉल कोई पारिश्रमिक नहीं देते हैं।

पति जब घर लौटे

0 श्रीमती संगीता दूबे

nÝrj ls ?kj ykSVs ifr dks odNns j lopdwu pkfg,&ml le; muds lkeus vkfFkZd raxh ;k ?kjsyw ijs'kkfu;ksa dk fØu ugha gks] rks csgrj! dgha ,slk u gks fd ?kj ykSVrs gq, muds ikao fHkdus yxsa] ftl ?kj dks ifr&iRuh nksuksa us I;kj vkSj viusiu ls lakokjk gks] mlh ?kj esa ykSVrs gq, ifr f>dus yxs] rks vkilh laca/kksa ij iz'u fpg~u yxus yxrs gSaA de ls de uhjt vkSj 'kksHkk ds fdLls esa rks ;gh gqvkA nÝrj [kRe gksrs gh ?kj pyk vkus okyk uhjt vc ,d vjls ls nsj jkr x, ?kj ykSVrk gkFkkA iRuh 'kksHkk pqipki [kkuk ijksl nsrhA nksuksa ds chp [kkeks'kh ilj h jgrhA uhjt [kkuk [kkdj lks tkrkA 'kksHkk mlds djhc vkus dh dksf'k'k ugha djrhA uhjt Hkh dksbZ igy ugha djrkA dgha vki ds lkFk Hkh rks ,slk gh dqN ugha ?kV jgkA vxj dke dh O;Lrrk ds vykok dksbZ vkSj otg gS] rks ifr ds cnyrs O;ogkj dks xaHkhjrk ls ysaA lkFk gh bl ij Hkh fopkj djsa fd dgha vki [kqn gh blds fy, ftEesnkj rks ugha gSaA uhjt igys ,slk ugha FkkA mlesa vk, cnyko ds fy, mldh iRuh 'kksHkk gh ftEesnkj FkhA og ifr ds ?kj ykSVus ij mls lopwunsus ds ctk; mlds lkeus tekus Hkj dk nq[kM+k ysdj cSB tkrhA dHkh cPpksa dh f'kdk;r] dHkh uhjt ij gh rkuk d'kh] rks dgha vkfFkZd raxh dk jksukA /khjs&/khjs og 'kksHkk ls nwj gksus yxkA m/kj 'kksHkk us Hkh mldh cs:[kh ns[kdj mldh ijokg djuh NksM+ nh;kA ;k uh dby feykdj ;g fd nkaiR; nksuksa ds fy, dks> cux;k

vdlj bZxks izkWCye] ikfjokfjd dkj.k] ukle>h] ekufld vfLFkjrk] vkfFkZd dkj.k oxyrQgfe;ksa ds dkj.k ifr&iRuh ds chp dVqrk iSnk gks tkrh gSA /khjs&/khjs gkykr brus xaHkhj gks tkrs gSa fd muds chp lacknghurk dh fLFkfr vk tkrh gS vkSj os rks vtufc;ksa dh rjg thus yxrs gSaA viusiu dh txg laca/kksa esa mis{kk tj vkus yxrh gSA os ,d&nwljs ls nwj&nwj jgus yxrs gSaA ifr&iRuh ds chp ;gh lcls [krjukd fLFkfr gksrh gSA bl izdkj ds vyxko ds Hk;kud urhts lkeus vk ldrs gSa] tks fdlh fygkt ls nksuksa ds fy, Bhd ugha gSaA ifr ds dke cgqr ldrs gSa ;k u'ks dk lgkjk Hkh ys ldrk gSA iRuh dks ifr ds LoHkko esa cnyko yxs] rks mls caca/kksa esa n`<+rk o feBkl ykus ds fy, iz;Ru'khy gks tkuk pkfg,] vU;Fkk nkaiR; lq[k u'V gksrs nsj ugha yxrhA nÝrj ls ykSVrs gh ;fn ifr dks ?kj esa rukoiw.kZ ekgkSy feyrk gS ;k fQj iRuh dk vlg;ksx feyrk gS] rks tkfgj gS fd mlds rukonqxquk gks tk,xk vkSj mls ?kj ;krukdh txg yxus yxsxk vkSj fQj 'kq; gks tkrk gS nsj ls ?kj vkus dk flyflykA og tkucw>dj ;kj&nksLrksa ds lkFk le; xqtkjrk gS vkSj nsj ls ?kj vkrk gSA ,sls esa ifr&iRuh dk ukeek=dk fj'rk jg tkrk gSA ,sls gkykr esa iRuh dh Hkwfedk egRoiw.kZ gksrh gSA og FkksM+h&lh le>nkjh] I;kj o viusiu ls laca/kksa esa igys&lh xjekgV yk ldrh gS] fnu&Hkj ds dke vkSj ruko ds dkj.k ?kj fdlh ds fy, Hkh jkgr Hkjh 'kj.k dh rjg gks ldrk gS] og vxj lkSgknZ vkSj vkilh le>gks] rks ?kj dh vksj O;fDr [kqn&c&[kqn ykSVrk gSA fey&cSBdj pk; ih,a vkSj gydh&QqYdh ckrsa djsaA vewwmu ifr nÝrj dh ijs'kkfu;ka o dke ds nckko ds dkj.k nÝrj ls dkQh ruko xzLr rks cu,xk gh] vki ds izfr mudh izse Hkkouk dks Hkh c<+k,xkA

शीघ्र प्रकाश्य शीघ्र प्रकाश्य

सुप्रभात

कवि एवं उनकी कविताएं (भाग 1)

नवोदित कवियों का सचित्र परिचय सहित उनकी कविताओं का अनूठा संकलन सहयोगी आधार पर प्रकाशित किया जा रहा है जो कई खण्डों में छपेगा। इसी प्रकार कहानी एवं लघुकथाओं का भी अलग–अलग संग्रह छपेगा। कृपया अपनी रचनाएं हमें निम्न पते भेंजे अथवा सम्पर्क करें।

मासिक पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज',
एल.आई.जी.–93, नीम सराय कॉलोनी,
मुण्डेरा, इलाहाबाद

एम.टेक. कम्प्यूटर एजुकेशन सेन्टर,
धुस्सा पावर हाउस के पास, धुस्सा,(झलवा)
इलाहाबाद, मो0 : 3155949

कहानी

गिद्ध

✍अभिनव ओझा

gSnjkckn fla/kds lhekorhZ {ks=esa ,d
>ksiM+h ls lqYyhesgrjdkgj fudykAgEksyh
ijQSyh [kSrhdksxkSjlsns[kk] nksckj
rkyhctkbZ vkSj Qkadrsgq, cM+cM+k;k]
ßlkykbruk ghdjevPNk gksrkrks ftanxh
Hkj ijnsfl;ksadhxanxhlkQdjuhiM+rhAÞ
vanjmlchekWamnZlsgk;&gk; djjgh
FkhA

ßcqf<+;kdkstokuiwrds
jkt esa Hkh lq[k u
feyk] ÞlqYyh fQj
HkqHkqk;kvkSjnk,WagkFk
dhNksVhvaxqyhlsdku
dqjsnusyxkAnqcysirys]
fBxusvkSj yxHkx chl
lkydslqYyhus;gmxzrk
viusckilsik;hFkhAnks
lky igys blh rjg
mldkckiHkhgk;&gk;

lqYyh lksprkAgkWabrukeyky t:j Fkk
fdfdlhfnuogHkhukykik[kkuklkQ
djrk&djrkjkedks I;kjkgks tk,xkA
fgUnqLrkuns[kusdhcM+hbPNkFkhmldhA
lqursgSajkthoxkWa/khdcdsekjfn;sx,A
tkus vktdyogkWa fdldkjkt gS\ fdruk
vPNkyxrkgksxkogkWatgkWans[kks] fgUnwgh
fgUnwAC;kg] xkSuk] iwtkikB] gksyhnhokyh

ekbZdsfy, ikojksVhFkhghAogns[kusck
vjekucspkjhdk/kjkghjgx;k] lqYyh
usvkWa[ksca ndjrsgq, lksPkAmlsyM+dh
dkSunsrk\ u tkus dc >ich yxh] ;kn
ughaAtcuhanWVhrkslwjtp<+vk;kFkkA
bruheugwlrkfdtkM+sesaHkhdkSos fpYyk
jgsFksAlqYyhusnksuksagkFksalsvkWa[ksaeyha

vkSj cSBx;kAchM+hds
pkjrkcM+rksM+d'klstc
dqNtkuesatkuvkbZrks
/;kux;kvanjAlUukVkA
'kk;n lks xbZ gS vEekA
ns[ksacq[kkjcegqvkfd
ugha] mlus lkspkvkSjne
yxkdjmBkAekbZ [kkeks'k
FkhA
udksbZ gjdr] u vkoktA
u [kkWalh] ugk;&gk;A

djrkejx;k Fkk] gSts lsAmlsvkt rd
;kngS] ckiwchekSrdsckn nl fnurd
>ksiM+hesamYVhchxa/kcuh jghA ijekbZ
dhckrvkSjFkhA,desgrjdsukeijdj
da?khdjusvkSjdktydkVhdkyxkusdk
dke rks ekWa ghdj ldrh gS uAvkSj fQj
ekbZ ds flok; mldk Fkk Hkh dkSu\ vHkh rks
gfF[rs igys rd gche lkgc vkSj vCckl
ochyds ;gkWa ogh rks dke djrh FkhA
fdruhckjeukfd;kFkkmls] tSls lkr ?kj
cSlsrksvkSj] D;ksatkunsdj [kVrhgks\ ij
ekbZusfdlhchekuhFkhvktrd\ gche
lkgcchogwvkSjochykbuls?kaVkHkj
[kqlQql fd;s fcukmls jksVh dgkWa gte
gksrhFkhAvkSjvkt\tcogfueksfu;kls
v/kejhgksdj rM+i jghgS] chl&chl :i,
QsadusdsvykokrksuksansfO;ksausekbZchlq/
krduyhFkhA
[kSj] ;gkWadsfy,bruk ghcgqrgS] dHkh&Hkh

vkSjxaxklzkuAckiwdkqpiukoghachrk
FkkAges'kkfdllslqukrkFkkogkWadsA;gkWarks
tclsgks'klaHkkyk] oghlydkjvkSjrgen]
xksyVksihvkSjvYykvYykA fiNyhckj
tkusdSlsoksVnsusdpykx;kFkkAxyrh
mldhHkhughaFkhAgjs>aMsckysusnlds
uksVckykyptksfn;kFkkAgkWarkstcog
dksVnsusx;krksgoyrkjtqesjkrhusmls
?kwjkvkSj,dMaMkQsaddjekjkANwuls
eSykgkstkrkuAßHkwygksxbZ ljdkjÞ]
yaxM+krkgqvkHkkxfudykFkkogA
ßvjsejxbZjs!j{kkdjks'kadjthÞ]vanj
ekbZ fpYykbZAlqYyhusihNsEkwdhvkSjQqrhZ
lsvanjyidkAndkrksf[kykghrhgSA
FkksM+klkdM+opkrsyxjek;kvkSjekbZds
lhusvkSjisVijeyusyxkAdqNnsjckn
ogckgjvk;kvkSjnksyksVkikuhihdj
ysVx;kAlqpglsvU;dknkukrdisV
esaux;kFkkAcukusdhfgEerghughaFkhA

ßlksxbZD;kekbZ\Þ
dksbZ tokcughaA lqYyh fudVvk;kvkSj
ekFks ij gkFk jD[kkABaMk] lQsndksBhds
Hkkjh Hkkjde QkVdvkSjmlesa yVdrh
eksVhtathjchrjgBaMkA;sD;k\eqWagij
rksrhuefD[k;kWaD;ksafHkufHkukjghgSaA
lqYyhMjkA/kM+drsfnylsekWachuCt
WksyhAcstku]csneAvcHkhdksbZ'kd
Fkk\ekbZdksrkslacdjHkxdku~dsdcok
cqykfy;kFkkA
,d vthc lh vkokt mlds gyd ls
ckgjmNyhAflldrkgqvkogekWals
fyiVx;kA,diyesavdsyk] blHkjh
nwfu;kvkSjijk,yksxksadschpAvaxwBk
NkivkSjxadkjlqYyhHkhbruktkurkFkk
fdblns'kesa,dfgUnwesgrjchtkudh
D;kchergksrhgSAblltxgrksÅWapch
vkoktesajksukHkheukFkkA
dqNnsjyxkrkjjksuslssmldhfgpfd;kWa

dkWa/kxbZA vkWa[ksa ykyvkSj lkWal Qwyus yxhA ekWa ds psgjs ij vaxkjs NkgkydjfxjrkiM+rk dksgjvk;kA ßcsVk] ejs ls igys ,d dkj xaxkukgk, dk dM+k eu jgkÞ] ,ddkj mlus dgk FkkA mlds ä cki csVs f[kyf[kyk djgWal iM+s FksA ckiwdsxysesa gWals&gWals dhM+hdk /kqvkWaQalx;kFkk vkSj ogQVs dal dh rjg tksj&tksj ls [kkalus yxk FkkA ßlqu jgk gS b lnfyn~nj dh ckrÞ [kkWalh Fkeus ij eqLdjk dj ckiwdksyk Fkk] ß[kk;s dk fBdkuk gha] cqf<+;Åba fM;krS;kj gSaAÞ rhu tekr ikl FkkA fijkbe fefuLVj vkSj bysDlu tSls 'kCn vkjke ls dksyy srk FkkA vkWa[ksa dk ikuh vc lqYyh ds xkyksa ij cgus yxk FkkA xaxkLuku A;gkWa rks vkt ,d dkYWh ikuh Hkh ugha gSA 'kk;n FkksM+k cgqr eVds esa gksA ukjk;.k ds dEcs esa Hkh rks igj dks ikuh dk gkWa vkrkA eafnj dk ys dkaMds dn ;gkWa dk bdykSrk gS iEi Hkh mlds fy, ekgksx;k FkkA FkksM+h nwj ij ukjk;.k vghj ds dEcs ls lqcg 'kke nks pkj dkYWh ikuh feytk rkA mlds vykck vklikl dksbZ Fkk Hkh ugha A tks cM+h&cM+h dks fB;kWa Fkha] mu ls nl ikWap ejus ds uke ij Hkys feytk,] ij mlds lkFk nl dh lxkfy;ksa dh dkSNk j Hkh rks iM+uh FkhA

vpkud lqYyh es gz rj dk psgj k rruk] vkWa[ksa FkksM+k QSyh a vkSj og lh/kk gks dj [kM+k gks x;kA ugha] og Hkh [k vkSj c['kh'k ds iSls ls ekbZ dk fdfj;k dj eu ugha dj sxkA dqN iSls mlus ä t:jr ds fy, iqjkus lanwd esa Nqik j D[ks FksA fxuk] iwjs fN;klh :i;s FksA pyks dke py tk,xkA ukjk;.k dks [kcj dhA viuh vkSj rds lkFk rkSM+rk gqvk vk;k vkSj lqYyh dks /khjtca/kkus yxkA ,ddk j fQj vkWa lqvksa dh cj[kkA vfgfjupoqipki igqWapk hekbZ ds ikl vkSj fl j idM+dj ogha] tehu ij cSB xbZA

ßxkksy pØesa gh fpork tysxh u\Þ lqYyh dk detksj Loj QwVk&tyh rks ogha pkfg, ukjk;.k us xksy eksy lk tokc fn;k& ßpkfg, dk D;k eryc\ vkt rd og ha rks yk'ksa tyrh vkbZ gSaAÞ ßxksy pØ rks ge fgUnqvksa dk 'e'kku gS gh& ukjk;.k /khjs&/khjs dksyus yxk] ßxksy pØ b/kj eqphek pyjgk gS u\ rw rks tkurk gksxk fd vktdy [kku lkgc ogkWa viuh HkSlsa dkWa/kus yxs gSaA vHkh fiNys fnuksa gfj;k ddkM+h] ogh pkSdk dyk] vius HkkbZ dh vFkhZ ysdj vk;k FkkA dqN lqu gks xbZ [kku lkgc ds vknfe;ksa ls AÞ ßfQj D;k gqvk\Þ lqYyh ?kcjk x;kA ßgksuk D;k Fkk\ [kku lkgc ds yBSrksa us ekj&ekj dj mldh [kksiM+h [kksy nhA iwjk Hkstk dgjvk x;k FkkA rks uksa HkkbZ;ksa dh yk'ksa ,d lkFk mBhaAÞ lqYyh dks ekuks lkai lw?ka x;kA dqN nsj cngok l lk [kM+k jgkA utj mBkbZ rks mldh vkdbyrk fNi u ldh] ßrks\ vc D;k gksxk\Þ ukjk;.k >ksiM+h ds vanj ,d Vd rkdrk gqvk dksyk] ßrqe xksy pdz igqapks] eSa deSVh dk yksa ls feydj vkrk gWaw]Þ fQj viuh vkSj rls Åwapk h vkokt esa dgk] ßrqe ykl ds ikl gh jguk] eSa FkksM+h nsj esa vkrk gWwaAÞ ,d ?kaVs dk nnks toku] dh ds cjkcj ykfB;kWa ysdj /kM+/kM+krs gq, lqYyh dh >ksiM+h esa ?kql vk,A ßcdqEgkjk 'kkSgj vkSj dks cntkresgr j] dgkWa gSa rks uksa\Þ ,dus dM+d dj iwNkA iÙks dh rjg dkairh ukjk;.k dh vkSjr fdlh rjg dksyh] ßfpork dk bartke djus x, gSaAÞ ßvkSj gjke tknk igqWap x;k des Vh rd\Þ nwljk tokun gkM+kA ßidM+ ys deh uh dksÞ igyk xjtkA

lck ?kaVs dk ntcu kjk;.kW Wk gkFk lWaHkkys] djkgrk gqvk ?kj igqWapk rks viuh dh ch ds QVs diM+s vkSj fc[kjs dkyns [kdj tSls vklekuls fxjkA fdUrh iqaNh Fkh vkSj vk/khls T;krk pwfM+;kWa VWwVqh Fkha Aml vkSjr ij dqN nsj igys tks dgj VWwk Fkk mldk ,dek=lk{kh ekbZ dk 'ko FkkA csokch yk'k ds djhc mlus viuh ekSr Hkh vkt viuh gh vkWa[ksa ls ns[kyh FkhA ifr dks ns[kdj ogQwV&QwV dj jks iM+hA xksy pdz igqWapdj lqYyh dk igyk lkeuk gqvk HkSalksa dh vkokt+ vkSj xkscj dh cwlsA [kku rkfgj vyh [kku] bykds dk csrkt dkn'kkg iWapdh rkoj] [kjkZVu kSt okuksa ls f?kjkFkkA ßD;ksa cs lqYyh] D;k ckr gS\Þ ßesjh ekWa ej xbZ gS ekfydA ml dk fdfj;k dj edjuk gSÞ og gkFk tksM+ dj dksykA ßHkkx ;gkWa ls gjke h lkyk dkfQjAÞ lcgks&gks dj ds gWalus yxsA ^nkx nsuk gS ljdkj] /kje dh ckr gS]Þ mlh rjg gkFk tksM+s lqYyh fQj dksykA dystk vc tksj ksa ls /kM+dus yxk Fkk] tSls Nkrh ds vanj ls dksbZ pht+ cl dwn dj dkgj vkus gh dky hgksA ßvcs tkdj fdlh urh iks[kjs esa cgk ns dec[r dksA tkurk ugha bl txg ij eqphek pyjgk gSAÞ lqYyh dk [kwu [kkSy mBkA ij ;g oä gjke dh ekSr ejus dk ugha FkkA xqLlk ndk dj HkjkZbZ vkokt esa dksyk] ßfpork rks tykuh gh gksxh ljdkjA xojeUVus dh lksa lky ls ;g txg ge sa blh dk Lrs rh gS ekfydA bruk gd rks ge kjk curk gh gSAÞ ckr iwjh djrs&djrs ,d cjxh mldk frekx HkUukmBkA ,d tks jnkj dkj mlds lj ds fiNys fgLls ij iM+k] gFkkSM+s dh pksV dh rjgA ?kwe Hkh u ik;k Fkk fd ,d dks dkn

,dvkB nl ykfB;kWa cjl iM+ha] rsy fiykbZ] etcwr ykfB;kWaA og fcyfcyk dj fxj iM+kA

vax&vax dh Nhyrk rst mZ vkSj pDdj ds dkn va/ksjkA gks'k vk;k rks <yrs lwjt dh ihyh fdj.ksa mldh vk¡[kksa ds pkSaf/k;k xbZA vkl ikl ns[kk] lc xk;c A fdlh rjg mBk] Hk;kudi lM+k ls gksBksa ds dl dj ndkrs gq,A csodwQh dh mlus A vxj tkupyh tkrh rks ekbZ dh fprk dks vkx dSus nsrkA pkj rks ct ghx, gksaxsA vc D;k djs\ irk ugha ukjk;.k dgkWa gksxkA ekbZ ds ikl u tkus dkSu gksxkA dqN ha vdsyh u iM+ gksA

BaMc<+us yxh FkhA Åij ns[kk] nwj uhedh lcls ÅWapk Mky ij cSBk fx) 'kk;n mls ghrk dj gk FkkA mlus cdpkZ mrk j vkSj [kwu ls lus lj ij dl dj dkW/k fn;kA Vidu 'ko:gks xbZ FkhA yM+[kM+krs gq, og mBk vkSj dkila eqM+kA

?kj rdk lQj pyrs] f?kl Vrs vkSj jsaxrs gq, r; gqvkA fdl ls gdekaxus x;k Fkk\ jsfxLrku esa dsi iRFkj ds balku ksa ls \tgkWa thus nsuk gh, glku le>k tkrk gks] ogkWa ejus dh [kcj dkSu ysrk gSA dkiwodrk Fkk baM;kesa iafM+ ykxs lkjk dke djkrs gaSaA iwtk ikBds ckn yk'k tyrh gS vkSj jk[k dks xaxk th esa cgk nsrs gSaA rsjgosa fnu fcjknjh dks [kkuk Hkh f[kyk;k tkrk gSA exj ;gka fM;kuk gha gS lqYyh Hkarh A ;kn dj fdl rjg fiNyh rhokyh esa 'kgj esa ,d dRps dks dksM+ksa ls ihVk x;k FkkA mldk dlwj\ tyrk iVk [kk ekSykuk lkgc ds iklnx x;k FkkA mUgsa rks [kjksap rdu vkbZ ij yM+dk t+:jnks eghus fdlrj ij iM+k jgkA

tyrs ysvkS jryqdksa esa pq Hks dVs ad Hkkj mBk, og vkxs c<+rk x;kA cl Fkks M+h nwj vkSjA ehrj lkgc dk dcwrj [kkuk&ihiy dk iqrjkuk nj [r&cjdr vyh ds [ksr] vc ?kj nwj ugha gSA D;k bjknk gS\ jkr dks fdlh cä fprk tykuk Bhd jgsxkA ukjk;.k dk dEck Hkh vkx;k gksxk] mldh vkSj rugyk /kqyk nsxkA >ksiM+h ds fiNkM+s iM+k yd M+h dk dqjh k Hkh dke vk tk,xkA vkSyk n dk vkf [kjh djrc rks djuk gh gS] fQj pkgs Qkalh gks tk,A

vpkud ,d Hk;adj ph[k ls pkSad iM+k ogA MdMck;h vkWa [kksa ls ns[kk] mlds fcydqy cxy ls ,d fo'kky dk; fx) ia[k QM+QM+krk gqvk fudyx;kA bruk gks'k rks Fkk fdogmlpkSMh] uqdhyh pksap esa Qalh mlpht+ dks ns[k ikrkA og pht+] brh Nks Vh fdeqY Hesa cangks tk,] ml /kkjrk j pksa pesa and h FkhA gYdk [kwu Hkh Vid jgk Fkk mlesa ls A dqN dkyh] dqN lQsn] tkuh igpkuh lh pht] fdlh &&& fdlh &&& vkWa[k dh rjg !gkWa vkWa[k gh Fkh ogA

tehu ij iM+h [kwu dh owns sa dks lqYyh us Fkj Fkjkrs gkFk ls Nqvk A fpifpik] yky] rktk [kwuA

mldk fny cnym Bk A gs Hkxoku~ ! fdlh vfu'V dh vk'kadk ls Nkrh cqjh rjg / kM+dus yxhA

?kko] mZ] lnek&lc Hkwy x;k og A iwjh rkdr latksrs gq, >ksiM+h dh rj Q Hkkxk A dqy iy&ftanxh ds Hkkjh yEcs ksa dh rjg ! ikl] nl gkFk dh nwj h jgrs&jgrs dkQh dq N le>esa vkus yxkA

ßekbZ ! ekbZ !Þ lqYyh fpYyk;kA mldh mZukdlrk [kkeks'k fQt+kdslhus esa rQ+u gksrh pyh xbZA

vkSj ikl] fcydqy lkeusA

dHkh uHkqyk lds dkyk ut+kjk lkeus FkkA ekbZ dh yk'k nqyht+ ij FkhA vk/kh vanj]

vk/kh ckgjA nks dkSos vkSj ,d phyml 'kjhj ds isV vkSj pspjs ds fgLlksa ds ukspjs Fks] vanfM+;kWa dk gj vkxbZ FkhaA pspjk vk/ks ls T;knk mM+ pqdk FkkA ,d vkWa[k [kqyh] vkSj nwlj h ds LFkku ij ,d xM<k&gjh] dkyh] va/ksjh [kkbZ dh rjgA cnu [kwu ls yFkiFk vkSj /kksrh rkj rkjA ixyk x;k lqYyh A vkl ikl iM+s <sykas dks mBkrs vkSj Qsadrs] mxekxkrs] ph[krs og ml vksj >iVk A iyd >iVrs phy vkSj dksos 'kks jepkrs mM+ x,A lqYyh nqdM+sa ekj dj jks iM+kA lj ij ca/ks dqrsZ dks mlus ,d >Vds ls [kksyk vkSj ekbZ ds Åij Mky fn;kA og Hkh [kM+ku jg ldk vkSj dVh 'kk[k dh rjg fxj iM+k A ckadjh yh tehu ij lj iVd&iVd dj mldk ekFkk vkSj psgjk ygwyqgku gks mBsA ekbZ dk lj xksn esa j[krs gq, lqYyh dks yxk tSls mldk me fudy tk,dkA

va/ksjk mrjus yxk FkkA nj dkts+] f[kM+fd;kWa dUn A gok ds gksa BHkh ekuks flyx, Fks A u dksbZ vkokt+] u vkgV A lqYyh us ,d dkj fQj Åij] vklekuk dh vksj ns[kk vkSj ekbZ ds lhus esa eqWag fNik fy;kA

iFkjhyh t+ehu ij ,dkeq ekeekSr A cq[kus esa ,dcqrij Lrdk bardk yA [kcj ekew yh FkhA pkj eoku vkxs gh e lkgc dk <+k ihrs gq, viuh cse ls dks ys]

ßusd vkSj r Fkh cspkjh A ij vc lok y ;g gS fdbl xanxh dks ;gkWa ls gVk,xk dkSuA Þ

आवश्यक सूचना

दोस्तों इस बार से हम एक पेज केवल नवोदित कवियों के लिए प्रारम्भ कर रहे है। इस पेज में नवोदित कवियों की रचनाएं ही प्रकाशित की जाएगी। इसमें कविता, गीत गज़ल में से कोई भी एक हो सकता है।

होटल प्रबंधन में प्रवेश की तैयारी

वर्तमान समय में देश में होटल उद्योग को हर वर्ष लगभग 40,000 प्रशिक्षित होटल प्रबंधको की आवश्यकता होती है जबकि इस पाठ्यक्रम से संबंधित संस्थान कुछ ही हजार कैरियर तैयार कराते है. अब तो देश में पर्यटन को भी उद्योग का दर्जा हासिल है. अतः होटल उद्योग के विकास की संभावनाओं ने भी जोर पकड़ लिया है. पर्यटन को उद्योग का दर्जा मिलने के बाद से ही देश के मुख्य शहरों में एक सितारा से पॉच सितारा होटलों, रेस्टोरेंट की संख्या प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। होटल का सुस्वाद भोजन, कुशलता एवं तकनिकी प्रबंध–होटल प्रबंधन पाठ्क्रम का मुख्य उद्देश्य है. इस पाठ्यक्रम के माध्यम से जहॉ एक ओर अभ्यर्थी को होटल व्यवसाय में बृद्धि करने एवं उसके कुशल प्रबंधन संबंधी जानकारियॉ दी जाती है वहीं दूसरी तरफ अभ्यर्थी में सहयोग की भावना, कार्य के प्रति तत्परता, मानवी गुणों से विकसित करने की प्रेरणा दी जाती है.

10+2 पद्धति के आधार पर 12 वी कक्षा या समकक्ष परीक्षा उत्तीर्ण अभ्यर्थी होटल प्रबंधन में डिप्लोमा पाठ्यक्रम हेतु आवेदन कर सकते है. इस पाठ्यक्रम के प्रवेश के इच्छुक अभ्यर्थियों के लिए अंग्रेजी विषय की परीक्षा अनिवार्य विषय के रूप में उत्तीर्ण करना आवश्यक है. अन्यथा वे इस पाठ्यक्रम के निए अयोग्य होंगे। होटल प्रबंधन पाठ्यक्रम हेतू विज्ञापन मार्च–मई माह में रोजगार समाचार एवं प्रमुख समाचार पत्रों में निकाले जाते हैं। इसके लिखित परीक्षा होती है। लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार में सफल अभ्यर्थियों को वरीयता सूचि के आधार पर प्रवेश मिलता है। इस पाठ्यक्रम के माध्यम से कैरियर वनाने के दो मार्ग है

{1} किसी मान्यता प्राप्त फूड क्राफ्ट इन्स्टीट्यूट या इंस्टीट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट से डिग्री डिप्लोमा प्राप्त कर किसी अच्छे होटल में प्रबंधकीय पदों हेतु आवेदन करें.

{2}ऐसे होटलों से सम्पर्क करें जो स्वयं प्रशिक्षण देते है तथा प्रशिक्षण पूर्ण करने के पश्चात अपने ही होटल में नियुक्त भी कर लेते है.

राष्ट्रीय होटल प्रबंध एवं भोजन प्रौद्योगिक संस्थान, पूना, दिल्ली, होटल व्यवसाय का सर्वाधिक प्रतिष्ठित संस्थान है. इसके अन्य 17 होटल प्रबंध संस्थान देश के विभिन्न स्थानो जैसे– हैदराबाद, भुवनेश्वर, लखनऊ, भोपाल, कलकत्ता, गौहाटी, श्रीनगर, मद्रास, बंगलौर, तिरूअनंतपुरम, चंडीगढ़, ग्वालियर आदि में है। उक्त संस्थान होटल प्रबंध, भोजन प्रबंध प्रौद्योगिकी एवं प्रभुवत्त पोषण में तीन वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम हेतु संयुक्त परीक्षा का आयोजन करते हैं। इस परीक्षा में प्रवेश के लिए योग्यता अंग्रेजी विषय सहित 12वीं कक्षा उत्तीर्ण तथा आयु सीमा अधिकतम 22 वर्ष निध ारित है। यह परीक्षा अंग्रेजी और हिन्दी दोनों ही माध्यम से होती है। यह परीक्षा वस्तुनिष्ठ प्रकार की है। इस परीक्षा के तीन स्तर है पहले स्तर में तर्कशक्ति, द्वितीय स्तर में संख्यात्मक विषयक योग्यता एवं वैज्ञानिक क्षमता का परीक्षण होता है तथा तृतीय स्तर में प्रत्याशी के अंग्रेजी भाषा के ज्ञान की संपरीक्षा की जाती है.

लिखित परीक्षा में उत्तीर्ण प्रत्याशियों में से कुल उपलब्ध स्थानों के आधार पर साक्षात्कार के लिये बुलाया जाता है. साक्षात्कार में प्रत्याशी की होटल प्रबंध के प्रति अभिरूचि, तत्संबंधी ज्ञान, व्यवहार, कुशलता एवं व्यक्तित्व परीक्षण की जांच की जाती है. साक्षात्कार में सफल प्रत्याशियों का चयन पाठ्यक्रम हेतु कर लिया जाता है।

होटल प्रबंधन प्रवेश परीक्षा की तैयारी कैसे करें?

होटल प्रबंधन में प्रवेश हेतु प्रत्याशियों को चाहिए कि वह बाजार में उपलब्ध ा मान्य प्रकाशनों की तर्कसंगति, संख्यात्मक विवेचनात्मक एवं वैज्ञानिक क्षमता की विशेषकृत अथवा संयुक्त पुस्तकों का नियमित अध्ययन एवं अभ्यास करें. ॲग्रेजी भाषा के लिए शुद्ध लिखने एवं बोलने हेतु इंग्लिस स्पीकिंग कोर्स की मानक पुस्तक से अथवा कोचिंग अथवा दोस्तों एवं घर में बोलने व लिखने का भरसक प्रयास करें. पुस्तकों एवं कोचिंग का चयन सूझ बूझ के साथ करें. इसके अलावा यदि पूर्व परीक्षा के प्रश्न–पत्र कहीं से उपलब्ध हो जाएं तो उससे प्रश्न के स्वरूप व प्रकृति का ज्ञान हो जाएगा. साथ ही अध्ययन करने की आसालनी होगी. प्रतिदिन अंग्रेजी व हिन्दी का समाचार–पत्रा पढ़ने के साथ–साथ

महत्वपूर्ण तथ्यों को नोट करना आवश्यक है.

राष्ट्रीय होटल प्रबंधन एवं भोजन प्रौद्योगिक संस्थान के अलावा भी कई मान्य संस्थान या विश्वविद्यालय हैं जो कि होटल प्रबंधन अथवा इससे संबंधित पाठ्यक्रम संचालित करते हैं.

आगरा विश्वविद्यालय उत्तर प्रदेश, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय दरभंगा–बिहार–पर्यटन एवं होटल प्रबंधा का स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम संचालित करते है. इंदिरा गॉधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, दिल्ली एवं कोटा, मुक्त विश्वविद्यालय में पत्राचार द्वारा इसी से संबंद्ध पाठ्यक्रम भोजन एवं पोषण संचालित किया जाता है.

होटल प्रबंधन में डिग्री–डिप्लोमा के अलावा होटल एडमिनिस्ट्रेशन में डिग्री मैनेजमेंट कैटरिंग टेक्नोलॉजी एण्ड एप्लाइड नयूट्रीशन में डिप्लोमा, स्पेशलाइज्ड होटल मैनेजमेंट में स्नाकोत्तर डिप्लोमा, फंट ऑफिस, हाउस कीपिंग आदि. उपरोक्त पाठ्यक्रम छः महीने से लेकर तीन वर्ष की अवधि तक के है.

इसमें रोजगार की बेहतर सम्भावनाएं है.रोजगार परक एवं व्यवसाय परक होने की वजह से ही तो यह युवाओं के आकर्षण का केन्द्र बिन्दु है. पाठ्यक्रमको पूर्ण करने के पश्चात सार्वजनिक, निजी होटलों, औद्योगिक संस्थानों, कार्यालयों के जलपानगृहों, एथरलाइंस आदि में रोजगार सरलता से पाया जा सकता है.

देश के प्रमुख होटल प्रबंध व प्रशिक्षण संस्थान

0 फूड क्राफ्ट इंस्टीट्यूट, 31 इंडस्ट्रियल स्टेट, पटना, बिहार

0 फूड क्राफ्ट इंस्टीट्यूट, जयचन्द्र गंज, ग्वालियर, 474009

0 इंस्टीट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट एंड न्यूट्रीशन, पूसा, राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली, 110060

0 फूड क्राफ्ट इंस्टीट्यूट सेंट्रल पॉलिटेक्निीक कैम्पस, सेक्टर–26, चंडीगढ़– 160026

0 इंस्टीट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट कैटरिंग टेक्नोलॉजी एंड एप्लायड 'न्यूट्रीशन' सेक्रेटेरियल रोड, भुवनेश्वर, 75001

0 आगरा विश्वविद्यालय उत्तर प्रदेश होटल प्रबंध का स्नातकोत्तर डिप्लोमा

0 इंस्टीट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट कैटरिंग टेक्नोलॉजी एंड एप्लायड न्यूट्रीशन, अम्बाड़ी, अहमदाबाद

एहसासे ज़िन्दगी

डॉ. राज कुमारी शर्मा 'राज'

जब आ गये हैं आप तो आकर न जाइये
मिलने का सिलसिला ये बखूबी निभाइये
खानी है मेरे सर की कसम, आप खाइये
पर सर पे रख के हाथ नजर तो मिलाइये
जब धड़कनों ने प्यार का इकरार कर लिया
कैसे कहूं फिर आप से, जीना सिखाइये
बस एक बार मेरी तरफ आप देख कर
एहसासे — जिन्दगी में हरारत मिलाइये
जब सर पे ताज आपने रख ही लिया तो फिर
उजड़े हुए चमन में शगूफे खिलाइये
मरना तो चाहते थे मगर मर न पाये हम
अब हो सके तो आप ही मरना सिखाइये
जी लेगी तन्हा 'राज' जमाने से बेखबर
पर शर्त है कि आप भी जी कर दिखाइये

राष्ट्रगीत

फैज़ मोहम्मद फैंज

ये गुल और बुलबुल का प्यारा चमन,
है दुनिया से न्यारा हमारा वतन,
महक इस के माथे पे केसर की है,
न्यन तीखे तीखे है,
बनारस की सुबहें वो शामे अवश्य,
ये चांदी की रातें है सोने का दिन,
निगह बानी सरहद पे शेरों की है
मचलती हैं गोदी में गंगों जमन,
जहॉ पर सदा प्यार पूजा गया,
जहॉ से मोहब्बत का फैला चलन,
उसी मादरे हिन्द का वास्ता,
उसके माथे पे आने न पाये शिकन,
ओढ़लो प्यार की एक चादर सभी
फेंक दो बदगुमानी का मैला कफन।

"सहर"

✍अशोक गुप्ता

पहला भाग

{शाम का समय था सावन के महीने की रिमझिम फुहार शरीर में रोमान्चक उन्माद जगा रही थी हवा का झोंका मन को आनन्द विभोर कर रहा था कि अचानक एक चीख ने विवेक का ध्यान भंग कर दिया वह चीख किसी लड़की की थी जो खुशरूबाग के मजार के पीछे से आ रही थी विवेक ने अविलम्ब उस तरफ दौड़ा लगा दी}

विवेक – {दौड़ता हुए उनके पास आ जाता है एक लड़की बेबस हो चिल्ला रही थी}–क्यों बे, क्या हो रहा है यहॉ {तीनों लड़को मे पलट कर विवेक को देखा और हॅसने लगे लड़की भयभीत सी अपने आप में सिमट गई और निरिह दृष्टि से विवेक की तरफ देखने लगी।

सपन–अबे तू कहॉ से आ टपका निकल ले यहॉ से

पप्पू– बेटा बहुत मार खायेगा

पियूष–जा अपना काम कर हमे अपना काम करने दे यह हमारा मामला है से ये बुलबुल बहुत भाव दिखा रही थी हम इसे यहॉ उठा लाये, हमारे राह का रोड़ा न बन बर्ना अच्छा नहीं होगा

विवेक– {पास आते हुए }–अच्छा यहॉ तुम्हारा राज चलता है खुशरूबाग के मालिक हो अपनी मर्जी की करोगें क्यों

सपन– {चाकू निकालते हुए}–अबे जाता है या खलास कर दूॅ

{विवेक तीनों पर टूट पड़ता है एक तो लड़की पहले से सहमी और डरी हुई थीं लड़ाई होने लगी तो फूट फूट कर रोनें लगी और जमीन पर बैठ गई उस लड़ाई में चाकू का वार विवेक के कन्धे पर लग गया बौखलाहट में उसका क्रोध चौगुना हो गया उसने तीनो को घसीट घसीट कर बहुत मारा मार खाने के बाद तीनों भाग गये}

विवेक– {हाथ झाड़ते हुए लड़की के करीब आता है– लड़की अब भी सहमी सी विवेक को अपलक देखती जा रही थी विवेक उसके करीब बैठ जाता हैं उसकी ओर देखते हुए }–वो सब तो भाग गये घबराओं नहीं, कौन हो तुम, यह कहॉ से लाये है तुमको

✡अबे तू कहॉ से आ टपका निकल ले यहॉ से
✡जा अपना काम कर हमे अपना काम करने दे यह हमारा मामला है से बुलबुल बहुत भाव दिखा रही थी हम इसे यहॉ उठा लाये, हमारे राह का रोड़ा न बन बरना अच्छा नहीं होगा
✡कोई बात नहीं, मैं समय पर आ गया, अब कुछ नहीं होगा विश्वास करो, यही क्या, अब कोई भी तुम्हारी तरफ ऑख उठा कर नहीं देखेगा

प्रमिला– {सिसकते हुए}– मैं कालेज से लौट रही थी, यह लोग वही से मेरे पीछे हो लिये और मुझे सड़क से जबरजस्ती गाड़ी द्वारा यहॉ ले आये और .....{वह रोने लगी}–फिर

विवेक–{उसके चेहरे को अपने हाथों में लेता है प्रमिला की पलके विवेक के चेहरे पर स्थिर हो जाती हैं}–कोई बात नहीं, मैं समय पर आ गया, अब कुछ नहीं होगा विश्वास करो, यही क्या, अब कोई भी तुम्हारी तरफ ऑख उठा कर नहीं देखेगा–आह {वह कंधे पर हाथ रखता है चाकू का लगा वह घाव टीसने लगता है}

प्रमिला– {घाव को देखकर } उफ आपके कॅधे पर तो बहुत बड़ा घाव हो गया है {अपने साड़ी का पल्लू फाड़ उसके घाव को बॉध देती है विवेक उस अन्जाने पल के सम्मोहन में अपने दर्द को भूल जाता है अचानक बहुत तेज बिजली कड़कती है वारिश तेज हो जाती है और प्रभिला बढ़कर विवेक के सीने से लग जाती है विवेक प्रभिला का हाथ पकड़ कर उस स्थान पर आता है जहॉ पानी नहीं आ सकता था प्रभिला के हाथों को विवेक ने अपने हाथ में ले रखा था इतनी ही देर में एक रिश्ता कायम हो गया था उन दोनो के बीच शायद प्यार का}

प्रतिमा–{बैठते हुए शर्माती है} क्या बैठना जरूरी है वक्त ज्यादा हो गया है, मां परेशान होगी {वह अपनी भीगी पलके विवेक के पलकों पर किन्द्रित करती है विवेक भावविभोर सा उसे अपलक देखता रह जाता है} {उसके मन से यह आवाज उठने लगती है अब उस आनन्दमय अनुभव में इव जाता है फलैश वैक}{वह खुद को प्रभिला के आगोश में पाता है सफेद परिधाान में लिपटी हुई प्रभिला किसी आप्सरा से कम नहीं लग रही थी अचानक दोनो के होठ गुनगुना उठते है} टिपुरटिप टिप टिपुर टिप टिप टिपुरी टिपुर बरसे बरखा का पानी टिप टिप टिपुर टिपुर

सावन की रूत है, बैरन चाहत का है ये संगम। मन क्यों बेकल हो जाये, भीगे मेरी जवानी टिप टिप टिपुर टिपुर, बरसे बरखा का पानी मदमस्त हवा का झोका, क्यों करता है पागल झन झन झनन झनन, झन झन झनक झनक छन छन छनन, छन छन छनन छनन टिप टिप{और दोनो मुस्करा कर बाहर की ओर चल पड़ते हैं}

क्रमशः....

प्रेम न देखे जातकुजात...

दिल के धड़कनें जिस के लिए भी जरा ज्यादा जोर से धड़क जाती हैं, मन बस उसी के लिए बेताब हो कर जाता है. फिर वह नहीं देखता कि वह जिसे चाहता है, उस की जाति क्या है, धर्म क्या है, नाम क्या है, उग्र और रूपरंग क्या है? वह अपने चाहने वाले के खिलाफ उठे हर तर्क को भी झूठा करार देता है. वह मानता है कि सिर्फ मन की बात सच है. इस सच के सिवा सब कुछ झूठ है.

प्रेम की यही परंपरा है. सदियों से अपनी राह खुद तय करने के लिए प्रेम ने जिस तरह से समाज के नियम कानून, रीतिनीति की धज्जियां उड़ाई हैं, उसी का एक नया नमूना अभी हाल ही में सामने आया है.

दिल्ली में रहने वाली कमला ने प्रेम के लिए घरबार तक छोड़ना कुबूल कर लिया, जाति से उच्च ब्राह्मण होने के बावजूद उस ने अपने प्रेम के हमसफर के रूप में जिसे चूना, उस का नाम रमेश कुमार है, जो कि अनुसूचित जाति में आता है।

20 वर्षीय कमला की प्रेम कहानी तो अभी 3 साल पुरानी है, पर रमेश से उस का परिचय 8 साल पुराना है. रमेश के पिता भी कमला के पिता के गहरे दोस्त थे. रमेश से कमला के भाई की दोस्ती थी. दोनों परिवारों का आपस में आना–जाना था और होली और दीवाली जैसे त्योहारों पर एक दूसरे को उपहार भी देते थे पर जब से रमेश और कमला के बीच के प्रेम ने गुल खिलाना शुरू किया, दोनों परिवारों में कटुता गहरा गई. दोनों परिवार एक दूसरे की शक्ल देखना भी पसंद नहीं कर रहे.

कटुता की शुरूआत विगत वर्ष उस समय शुरू हुई, जब अपने 3 साल के सच्चे प्रेम में कई वादे कसमें खाने के बाद रमेश ने कमला के घर वालों से उस का हाथ मांगा. उस ने स्पष्ट शब्दों में कमला के घर जा कर उस के पिता से कहा कि वह कमला से शादी करना चाहता है.

प्रस्ताव अप्रत्याशित था, इसलिए इसे सुनते ही कलावती के घर के लोग आगबबूला हो गए और शाहिद को पीट कर घर से बाहर भगा दिया, कमला पर भी दबाव डाला गया कि वह रमेश का नाम तक अपनी जबान पर न लाए. अपने ही घर में कमला लगभग 4 माह तक नजरबंद भी रही. दोबारा उसे घर से बाहर कदम रखने की अनुमति इसी शर्त पर मिली कि वह रमेश से कतई मुलाकात नहीं करेगी. इस के बावजूद कमला अपने मन को रोक न सकी. वह रमेश से निरंतर मुलाकातें करती रही. उस के घर वालों को जब इस बात का पता चला तो उन्होंने कमला को फिर से घर में कैद कर दिया.

कई दिन ऐसे ही जद्दोजहद में बीते. कमला के लिए बेकरार रमेश ने किसी विश्वस्त के जरिए कमला के पास यह संदेश भिजवाया कि वह उस के साथ तुरंत कोर्ट में शादी करना चाहता है, इसलिए वह किसी भी तरह तीस हजारी कोर्ट में आ जाए.

कमला के लिए इस से बड़ी खुशी की बात और क्या हो सकती थी. उस ने उसी विश्वस्त के हाथ यह खबर भिजवा दी कि वह अपनी बहन के साथ उस के कालिज जाएगी. वह उस से वहीं मिल ले.

रमेश उसे वहीं मिल गया. वहां से वह कमला के साथ तीस हजारी कोर्ट जा पहुंचा और शादी के पंजीयन हेतु अर्जी लगा दी. इसी बीच मुहल्ले के कुछ शरारती किस्म के लड़कों को इसकी खबर लग गयी। लड़कों ने शादी के लिए नियत तिथि से 10 दिन पहले ही कमला के पिता को यह सूचना पहुंचा दी फिर तो एक नया बखेड़ा पैदा हो गया.

इस नई समस्या से कमला घबरा गई. घबराहट में ही उस ने 'ऐवा' की रीता वर्मा से मुलाकात की. रीता वर्मा ने उसकी दास्तान सुनने के बाद उसे 'ऐवा के दफ्तर भेज दिया। वहॉ उसकी इंचार्ज ने कमला के मातापिता का पक्ष जानने के लिए अपने यहां बुलाया, पर कमला ने उनसे मिलने से इनकार कर दिया.

इधर मामले ने एक नया मोड़ लिया. इस दिन कमला को पटियाला हाउस कोर्ट में हाजिर होना था। मजिस्ट्रेट का कहना था कि कमला बालिग है और वह अपनी मरजी से फैसला ले सकती है.

फिलहाल कमला 'ऐवा' संस्था में है और रमेश के साथ अपनी शादी की तिथि का इंतजार कर रही है. उस का कहना है कि रमेश से शादी करने के बाद वह घर जरूर जाएगी. भले ही घर का दरवाजा उस के लिए बंद मिले. उसे यह भी विश्वास है कि उस के माता–पिता भी उस के घर को एक दिन मान्यता जरूर दे देंगे.

ये हो नहीं सकता

vuhrk pkSgku

ßfd'kksj] Ekks

ßfd'kksj] EkksM+h nsj vkSj :d tkvks] ugha ;kjA vxj T;knk nsj gks x;h rks lfjrk ds xqLls dh lfjrk og fudysxhA vPNk gq vk dh roeus 'kkrh ugha dh Ade ls de jkst&jkst dh dhp&dhp ls rks cp gh x;sA vxj 'kkrh dj ysrs rks gekjh rjg iRuh dk Mj ijNkWb dh rjg ihNs yxk jgrkA dk'k! ge Hkh vius vki dks bu g;lhuksa dh vnkvksa ls cpk ikrsAß fd'kksj dh ;s ckrsa lqudj eq>s vius vki ij xoZ gks jgk FkkA eSa us eqLdjkrs gq, dgk&ßbl nksLr dh ckr eku h gksrh] rks vkt ;s gkWyu gksrk rqEgkjk\ fd'kksj] rqEgsa ;kn gks x;k fd rqEgkjh 'kknh ij lHkh yksx rqEgsa c/kkbZ ns jgs Fks vkSj eSa rqEgkjs vkus dk ysbu fnuksa dh dYiukesa [kks;k FkkA rHkh rqEgkjsa ,d fj'rsnkj us dgk&^D;ksa gSa Mle] rqEgkjk uEcj dc vk;sxk^ ßugha d:¡xk 'kknh] lj\Þ mUgksaus dgk&ßD;ksa HkkbZ rqEgsa yM+fd;ksa ls Mj yxrk gS\Þ ß;gh le> yhft, lj] ysfdu ge ;s uknkuh ugha djsaxsAÞ eSa us dgkA ge lc dq Nnw j ij [kM+h yM+fd;ksa esa ls ,d yM+dh dks yh] D;k 'kkrh uknkuh gksrh gSA 'kk;n og gekjh ckrsa lqu jgh FkhaA eSa us dgk&ßfcYdqy! 'kknh rks ogh dj ldrk gS tks viuh vktknh] viuh chch dks rksgQ+s esa ns nsus dh fgEer j[krk gksAÞ esjs bruk dksyrs gh og kWmifLFkr lHkh yksx g¡l iM+sA mu lHkh dh g¡lh lqudj oks yM+dh dksyh&ßgeh dks gSa dRydjrs] ge a dsk okfry dkrs] u dqN ns lds ;s gedks] ,glku fQj Hkh tkrsAÞ ,dut+j esjh vksj ns[krh pyh x;hA rHkh fd'kksj us eq>s >d>ksjrs gq, dgk&ßokgW [kks x, ;kjAÞ ßlp dgrs gks! ml oDr gekjs ekFks ij toYQs yqjkrh Fkh] vkt rks] flj ds peu Hkh mM+rs tk jgs gSaA ;kj oks gekjh tokuh dk tekuk Fkk vkSj vkt gekjk ugha] gekjs cPpksa dk tekuk gSA ge rks viuh tokuh ds te+kus dks vius cPpksa ds ;ksa opkiu esa nopkj ikysaxs ysfdu rqe——Þ ßvPNk] NksM+ks ;kj] eSa pyrk gwWAÞ fd'kksj rks bruk dgdj pyk x;k] ysfdu vkt eq>s ,slk yxk jgk Fkk tSls esjs nksLr us esjk et+kd mM+k;k gksA vkt eSa fQj vrhr ds ml lk;s esa igq¡p x;k tgk¡ ftanxh us 'kk;n esjk Lokxr fd;k gks\ ysfdu ml le; esa bl xgjkbZ dks tku ugha ik;kA fd'kksj dh 'kknh ds yxHkx nl eghus ckn eSa fd'kksj dh iRuh ls feyus x;kA FkkA nLrd nsrs gh fdlh us njokt k [kksykA eq>s ns[krs gh mlus vkokt nh&ßthtkth vki ls dksbZ feyus vk;s gSaAÞ ßvjs ;kj vfer! iwjs nl eghus ckn n'kZu fn;s gSa rwusA rc ls Fkk dgkW rwAÞ eSa us dgk&ßcl ;kj FkksM+k dke ls ckgj x;k FkkAÞ ßvc rw vius dke dks ekj xksyh] vkSj viuh ls feyAÞ ßrks rwD;k le>rk gS eSa rq>ls feyus vk;k gwW vksgks] rc vc gekjs ;s fnu vk x;sAÞ eaS cSBx;k fd'kksj us viuh iRuh dks vkokt nhA lfjrk b/kj vkvksA HkkHkh ds vkus ij eSa us mUgsa ueLdkj fd;k rks dks eqLdjkrs gq, dksyh&ß esjs nsoj dks eq>ls Hkh lqUnj vkSj lq'khy iRuh feysAÞ HkkHkh ;s vk'khokZn D;ksa ns jgh gSa tks esjs fy, O;FkZ gksA ge rks yM+dh uke ds vkx ls dks lksa nwj pyrs gSA HkkHkh us vkokt nh&ßvPNk chuk] tjk pk; ysdj vkukAÞ FkksM+h nsj esa pk; gkftj gks x;hAß ;s esjh lkyh chuk gSAÞ ßfd'kksj lqukgSa] chch ls vt+ht] chch chch NksVh cfgu gksrh gSA vc rks rw Hkh lkyh dk thtk cu pqdk gSA rwD;k dgrk gSA bl ckjs esa ——AÞ ßvjs] vfer! viuk eky rks dHkh Hkh fey ldrk gSA ysfdu] ijkbZ vekur ikus dk etk gh vkSj gSAÞ chuk MkWDVj gq, dksyh&ßthtk theq>s ,slk etkd ilUn ugha gSAÞ fd'kksj us chuk dk gkFk idM+dj viuh vksj f[kaprs gq, etkd ds vUnkt es dgk ßvPNk ;gh crk nks fd rqeeks ilan D;k gS\ xi'ki tkjh j[krs gq, fd'kksj us dgk&ßeSa ml yM+dh dk ftanxh Hkj ikuh Hk:Wxk tks esjs ;kj ds dqRrkjsa jgus ds lacYi dks rksM+ nsaÞ HkkHkh dksyh&nsoj th] vkt rd vki ls oksbZ yM+dh fHkM+h ugha gksxh\ ugha rks dqRrkjsa jgukD;k\ dqRrkjsa gSa] ;gHkh HkwytkrsAÞ HkkHkh th] ßckW/ksa dksbZ gesa dks Mksj dgkW gS] fdlh gWlh ukesa bruk tks j dgkWA esjh dksbZ rqyguk cusa—— ugha! ;s gks ugha ldrkA chuk vpkud dksy iM+h&ßvfer th vxj vki yM+fd;ksa ds ckjsa esa cl bruk gh tkurs gSa rks cgqr de tkurs gSA fdlh yM+dh ds fy, ;g cgqr gh ekeqyh ckr gS fd og fdlh yM+ds dks 'kkrh ds fy, etcwj dj jsaA vki rks balku gS] ysfdu bfrgkl xokg gS fd vkSjr us bZ'oj dks Hkh ifrds :i esa izkIr fd;k gSAÞ chuk dh vkokt dejsa esa bl izdkj xwat jgh Fkh] ekuksa] tSls lkjk dejk lkFk dksy jgk gksa\ ,dk,d og vkokt cUn gks x;h rks dqN iyds ekSu dks rksM+rs gq, eSa us dgk&ßvks ds fd'kksj eSa pyrk gwWAÞ

> काश! हम भी अपने आप को इन हँसीनों की अदाओं से बचा पातें।”
> ‘क्यों हैंडसम, तुम्हारा नम्बर कब आयेगा’ “नहीं करूँगा शादी, सर?”
> उन्होंने कहा—“क्यों भाई तुम्हें लड़कियों से डर लगता है?”
> “यही समझ लीजिए सर, लेकिन हम ये नादानी नहीं करेंगे।”

vferds tkus ds ckn fd'kksj us chuk dks MkWVrs gq, dgk&ßchuk rqEgsa ;g lc dgus dh D;k t:jr FkhA 'kknh djuk ;k u djuk mldk viuk ekeyk gSAÞ

ßlkWjh thtk thA eSa tkurh gw¡ fd eq>s dksyk ugha pkfg, Fkk] exj eSa vius vki dks jksd ugha ik;hAÞ

dqN fnuksa ckn fd'kksj esjs ?kj ij vk;k vkSj mlus dgk fd oks ml fnu dh ckr ls dkQh ijs'kku gS vkSj og cknesa chuk dks MkWVk Hkh FkkA eq>s yxk fd fd'kksj ds ?kj tkdj chuk ls ekWQh ekx yuh pkfg,] mls esjs dkj.k MkWV [kkuh iMhA eSa mlds ?kj tkdj igq¡pkA njoktk [kqyk FkkA eSa vUnj tkdj lks Qs ij cSB x;s gq, HkkHkh dks vkokt nh] vkokt lqudj chuk esjs djhc vk;h vkSj eq>s ns[kdj dksyh&ßvksg——

——vki! nhnh vkSj thtk th rks dgka x;s gSaA ;gka gekjs fl ok dksbZ ugha gSA ;g lqudj eSa [kM+k gks x;kA x;k rks Fkk mlh ls feyus exj mls ns[krs gh esjs gksB fly x;sAÞeq>s [kM+k gksrs ns[k] og dksyh ßcSfB, fd;k¡ Hkys gh dkWVk lgh] ysfdu mUgha ds iSjksa dks Nyh djrh gS tks mUgsa cpkyrus dh Hkwy djrk gSA vki pkgs rks thtk th dk bUrtkj cSB dj ldrs gSAÞ bruk dgdj og tkus yxhA eSaus mls jksdrs gq, dgk&ßlqfu,] eSa vki ls gh feyus vk;k FkkA ge ls Hkyk] vkidks D;k dkeA eSaus f>>drs o ?kcjkrs gq, dgk&ßv—v—vki eq>s ekQ dj nhft,A esjh otg ls vkidks fd'kksj ls MkWV iMhAÞ dksbZ ckr ugha lektus vkSj geus mudks bruk vf/kdkj rks fn;k gh gSA vki cSfB, eSa pk; ykrh gw¡AÞ bruk dgdj og pyh x;hA esjk eu fopfyr gks jgk FkkA thpk jgk Fkk fd eSa mlls ogqr dqN dgw¡] ijUrq tcdks lkeus vkrh rks tqcku ij tSls rkyk yx tkrkA chuk pk; ysdj vk;hA ge nksuksa us vkeus&lkeus cSBdj pk; ihA fdarq nksuksa gh [kkeks'k FksA dHkh&dHkh esjh utj chuk ds psgjs ij :d tkrhA pk; ihus ds ckn eSaus dgk&vkods] rks eSa pyrk gw¡] Achuk us eqLdjkrs gq, dgk&ßtkb;s] ge :dus dks ugha dgsaxsAÞ eSa ogk ls pyk vk;kA ij utkus D;w mldk psgjk esjs ls lkeus vk [kM+k gksrkA eSa vius dke ls O;Lr gks x;kA dqN eghuksa ckn fd'kksj us Qksu fd;k vkSj dgk&ßvferrqEgkjs iklvxj Fkks M+k le; gks ;gk¡ pys vkukAÞ ßD;w\A ßvjs——rqe gks dqN nsuk gSAÞ fd'kksj ls feyus ij eq>s ,d i= izkIr gqvkA eSa Mj jgk Fkk fd utkus D;k ladYi rks M+uk pkgrh gks \ugha——dHkh ugha ij dks dksbZ izse i= ugh FkkA ml dkxt ij dqN ,slk fy[kk Fkk&

gesans[kus dksku+jpkfg,]
gesa tkus dsk fbx+jpkfg;sA
esjs usus ds Hkk otks ik+lds]
gesa ds dksbZ ,slk dfopkfg;sA
Hkys eu ifjark xxu esa fQjs]
exj vkf'k;s dks teh pkfg,A
Hkys ftanxh ds de iy feys]
exj ftanxh esa [kq'kh pkfg,A
;s rqe tkus gks (rqe dks sa D;k pkfg;s]
gesa pkgrs gks dk tgk¡ pkfg,A

vrhr ds lk;ksa ls mHkjrs ns[k fd ?kM+h esa nl ct pqds gSaA Hkw[k rks 'kk;n fe Vpqdh FkhA vkt fcu [kk;s lks tkrs gSaA izkr% eSa pkjk ds gh tkx x;k] 'kk;n Hkw[k yxh FkhA vHkh rks ?kj esa dksbZ Hkh ugha tkxk gksxkA HkkHkh rks 5 cts gh tkxrh gSA ?kaVs Hkj igys gh tkx nw¡ rks ijs'kkuh rks gks xh ugha A vPNk gS] uk'rk jks t ds le; ls tYnh cu tk,xkA ;g lksp dj HkkHkh ds njokts ij nLrd fn;kA dqN nsj [kV[kVkus ds ckn HkkHkh us njoktk [kksykßvks Qks] D;k gSA dgks njokts dks Bksd jgk gksAÞ

ßHkkHkh gesa pk; pkfg;sAÞ HkkHkh eqLdqjkdj vYlkrh gqbZ dksyh ßvjs bl ds fy, esjh uhan D;ksa [kjkc djrhAÞ eSaus dgk&fcls txkrk] cqyh dks txk nsrk rks lkjk ?kj lj ij mBk ysrhA ß[kqn gh cukdj ih ysrsAÞ ekuksa eSa pk; cuk Hkh ysrk rks uk'rk——A

ßrks rhu ?kaVs ckn rks feyh gh tkrk uA rks ?kaVs esa Hkw[k se jrs ugha tkrsAÞ HkkHkh ds dksyus dk lyhdk esjs eu dks ijs'kku dj fn;k] ysfdu iSV dh vkx rks cq>kuh gh iM+hA jkst dh rjg ge vkt Hkh vkWfQl igq¡p x;sA ijUrq vkt dke esa eu ugha yx jgk FkkA upkdrs gq, Hkh HkkHkh dk gq, 'kCn esjs fnekx esa xqat jgs FksA vxj jkr dks Hkw[kk lksrk rks lqcg mUgsa tYnh txkrk gh D;w¡A jkr vxj HkkHkh [kkuk ysdj vk;h gks rh ;k [kkus ds fy, dgrh rks 'kk;n csaeu gh lgh] ij Fkks M+k cgqr rks [kk gh ysrkA ij lc [kk ihdj lks x;sA tc ls ekW dk nsgkUr gqvk FkkA HkkHkh dk jdo;k rks rHkh ls cnyrk vk jgk FkkA ij vkt rks rmok dksyk ku Lrj cudj pqHk x;kA oS ls Hkh vc ekW rks gS ugh Atks [kkuk [kus ij rks FkkiM+ ekjrh vkSj tksrs gq, eqUg esa jksVh<wal nsrhA ekW ds ckn ckSu gS vkf[kj] tks ml izse dh deh dks iwjk djsA ,d ckyd dks ekW dh t:jr fdruh gksrh gSA ;g rks tkurk Fkk] ysfdu thou dks lkFkh dh fdruh t:jr gS a ;s 'kk;n eq> vkt rd ugha irk FkkA

ysfdu eq>s ,d lkgc ;kn vk jgs gSa] ftUgksa us ,d ckj iwjh jkr lksus rd ugha fn;k vkSj dgus yxs&

ßHkkbZ tku] vki 'kknh 'kqnk gSAÞ

ßugha Þ

ßvkius fdlh yM+dh ls I;kj fd;kAÞ

ßnsf[k, ukgh geus 'kknh dh gSa vkSj uk gh fdlh ls I;kj fd;k gSAÞ

ßvek——;kj] rks bl fny dk D;k djksxs] ftl fny esa fdlh dh rM+i ugks dks fny gh D;k\Þ

ysfdu ,d lky igys esjh lksp vkt ds foijhr FkhA eSa vius nksLrksa ls dgk djrk Fkk&ßvxj yM+ds detks j ukiM+s rks yM+fd;ksa ds :i lkSUn;Z esa bruk cy dgk¡AÞ ij tc eSaus igyh ckj mls ns[kk rks n`'; fujkyk gh

FkkA lj ls ysdj ikWo rd ftUgs dk vax vax xgukas ls lq'kksfHkr FkkA gh&gh pof M+;ksa ls Hkjs gq, esa gnh ls yky gkFk] iryh lh dej ij bruh Hkkjh rxM+h———eSa mlds :i dk o.kZu djrk bl gkyr esa gh ugh Fkk vkSj viuh dhch ds dkjs esa dgus yxk brus uktqd cnu ij brus xgukas dk Hkkj Abl s mrkj Qsad Abl xqfM+;k lh yM+dh dks viuh dkWgksa esa lesV yw A eq>i j 'kk;n egks'kh Nkus yxh Fkh A Fkks M+k vkxs c<+k rks >V ls mlus eq>s ,d isij ns fn;k] isij ns rs gh mlus esjs ikWo Nw dj nw jtk fnokj ds ikl [kM+h gks x;h A ml isij ij fy[kk Fkk A vki gekjs djhc er vko;s A gesa vki ls Mj yxrk gS A eSa us mlds ikl tkdj mldk ?kw?kV [kksyk A Vslw, cgjgs Fks A utjs >qdh gqbZ Fkh A gksaBns [kdjeSa VWVx;k vkSj cscl gks mUgsa pqoeus ds fy, vkxs c<+k gh Fkk fdoks >V ls esjs pj.kksa esa cSB x;h A dqN v'desjs iSjksa ij Hkh fxj x;s A eq>s vius iq:"kRo dks laHkkyuk iM+k-;s 'kk;n igyh dkj Fkk-eSa us mls vius pj.kksa ls mBkrs gq, dgk rq Egsa vxj bruk Mj yxrk gS rks esjs iSj D;ksa Nw,-t:j Fks-rq e jks D;ksa jgh gks-rq Egsa eq>ls Mj D;ksa yxrk gS-og jksrh gqbZ dksyh eq>s dqN ugha irk-eSa us ixyh lh yM+dh ds esa gnh ls jps] lts gkFkksa dks pwe fy;k-eSa mldk gkFk idM+ dj mls fcLrj rd yk;k vkSj dksyk&^rq e lks tkvksa 'kk;n Fkdx;h gks xh-eSa pknj fcNkdj rfd;k j[k tehu ij ysV x;k-dks dqNns j fcLrj ij pqIih lk/ks 'kkar cSBh jgh-eSa dqNns j dkn lks x;k-yxHkx lqcg ds pkj] lk<s pkj dk le; gks jgk gksxk fcLrj ij utj iM+h rks iyHkj ds fy;s rks eSa pkSd iM+k-fcarq utj ?kqekrs gh jkgr feyx;h-oks fcuk fcLrj ;wgh tehu ij iM+h Fkh-'kkrh dh igyh jkr-lqgkx lst us [kqc vkjke fd;k-eSaus mlds ikl tkdj mls lksrs ls txk;k-?kcjkrh lh vius diM+ksa dks laHkkyrh gqbZ mB [kM+h gqbZ-eSaus dgk vkxs dh ftanxh esa D;k feys D;k ugha-;s rks ugha

tkurk esjs ?kj vkSj thou esa rqEgkjh ;s igyh jkr gS-bl fcLrj dks NksM+ dj bl s :lok er djks-nks fnu ckn mlds eSads ls mlds ysus dkys vk x;s-nqYgu dks ek;s Hkstus dh rS;kjh gks x;h dks lt lWoj fQj esjs ikl v;h vkSj esjs ikao Nwus yxh-eSaus mls dgh esa gh jksd dj dgk vxj rqe ls rqEgkjh lgsfy;ksa us iwNk fd rsjk ifr fn[kus esa dSlk gS] rks D;k dgksxh-;gh fd rqeus mls ns[kk gh ugha-oSls eSa bruk rks cwjk ugha gwW fd mls ns[kk gh u tk,-mlus eqLdjkrs gq, {k.kHkj kes jh vksj ns[kk vkSj iyHkj esa gWlrh gqbZ pyh x;h-ml jkr eq>s u tkus D;wa uhan ugha vk jgh Fkh-ugksrs gq, Hkh dks dkj&dkj fcLrj ij utj vkrh-dejk rks [kkyh Fkk ij esjs fnykas fnekx ij Nkpoqdh Fkh-

vc rks fny ;g dksy jgk Fkk&
ge rsjh tqnkbZ esa rM+i mBs
vkSj feyu dh ?kfM+;k ?kM+h ugha

vc rks mls lhus ls yxk ysus dh pkgr fnu izfrfnu mBrh tk jgh Fkh-utkus dSls dks fnu chrs-fadarq fQj ik;ydh >adkj ls esjk ?kj xwWt mBk-ysfdu vc utkjk vkSj gh Fkk-vc lkjs ?kj dks lEHkkyrh Fkh-lcdh ns[kHkky djrh Fkh-fcuk uhan dh vkW[ksa cUn djmldh xfrfof/k;kWns[kuk eq>s vPNk yxrk Fkk-poqids ls rhnkj dk etk vkSj gh gS-og poqids ls esjh rLohj dks ns[krh vkSj vkW[ksa can dj lhus ls yxk ysrh-,d fnu rks gekjs lcz dk ckW/k VwV gh x;k-oks esjh rLohj fy;s cSBh Fkh-eSaus vpkud tkdj mlds gkFkksa ls Qks Vksa [khap yh-og 'kjekdj vius gkFkksa ls psgjs dks <dyh-eSaus gkFk psgjs ls gVkrs gq, dgk&rLohj fnyds brus djhc vkSj ge lhus ls brus nwj-mldh rst /kM+dh /kM+dukas dks geus vius lhus esa Nqik fy;k-oks Hkh g;k ls fleV dj eq>ls fyiV x;h-oks jkr Hkh D;k jkr Fkh-tks jkr gks dj uhan mM+k x;h-vjs——dek y gS ;kj geus vius fny dh fdrkc dk lcls gWlhu iUuk rqEgsa i<+dj lquk;k vkSj rqe fcuk lqus gh lks x;s-ugha] ;kj lks;k rks ugha gwW ysfdu ;s

t:j lksp jgk gwW fd rqe ;k rks lpeqp [kq'k ulhc gks ;k fQj [kcksa dh rqfu;k ls vk;s gks-;s [kcksa dh rqfu;kWvkids gkFk ly gks-'kk;n] irk ugha-vPNk ,d ckr crkvks\ ,d yM+dh dh vgfe;r fdruh gksrh gS\ lkjh rqfu;k ds fo'k; esa rks ugha dksy ldrk fdarq vius ckjs esa bruk rks dksy ldrk gwW fd mldk eq>s ckr&ckr ij MkVuk] NksVh&NksVh ckrksa ij >M+rs jguk] fQj Hkh esjk iwjh rjg [;ky j[kuk- 'kk;n ,d vPNk thou lkFkh gh eu dh ryk'k gksrk gS- 'kkrh dh t:jr vDlj yM+fd;ksa dks T;knk gksrh gS-gkFk esa vxj uksV gks rks gj lq[k gkfly fd;k tk ldrk gS-dks Øksf/kr Hkko ls dksyk th ugha-iSlksa ls ru [kjhnk tk ldrk gS eu ugha-izse ikus ds fy, izse nsuk Hkh iM+rk gS-enZ ds lhus esa dks fny gks uk pkfg, tks vkSjr ds eu dks le> lds-vxj eu dk feyu gS rks vkSjr ls [kqcLwjr dksbZ og jk ugha gS] ysfdu u feys rks bl ls cM+k ir>M+ Hk dksbZ ugha gksrk gS-bruk dgdj oks rst dne c<+krs gq, pyk x;k-ysfdu ,slk yxrk gS tSls esjh ckr mls cgjh yxx;h gks-dek y dk vkneh gS] iq:"k gks dj Hkh vkSjrksa ds i{k esa dksyrk gS-eq>s mlds ml izse dk ,glkl eq>s vkt gks jgk gS] tks [kq'kh ml oDr mlds psgjs ij Fkh-dkbZ mldh iRuh dh rnsu Fkh-ij eSa D;k d:Wa dke dh rks dHkh ugha gS] ysfdu vki esjs gkFk ikao ckeg ha ugh djrs-utkus esjs fnykas fnekd esa bruh cspSuh D;ksa gS-vc ;gh Bhd gksxk fd ?kj esa tkdj lksus dh dksf'k'k d:-fljoqnZ Hkkjh gks jgk gS-eSa ?kj dh xyh esa py jgk Fkk] eq>s rks fuxkgsa dM+s /;ku ls ?kwj jgh Fkh-mudks igpkurk rks eSa Hkh fy;k Fkk-og viuh ekW ls dksyh ekW ;g rks vfer gS-ij blus dksbZ 'kkrh ugha dh vPNk——ekW blus ml le; rks dqpkjs iu ds tks 'kesa 'kkrh ugha dh Fkh-vjs ugha cspkjs dks dksbZ lgkjk fey tkrk rks Bhd gh Fkk-vUnj dh ckr rks ;gh gS fd vc bl s dksbZ ?kkl ugha Mkyrk-;s esjh

cnulhc gS tks ;s dkrsa esjs dku rd igqWpb x;h- esjs viuse ep>s pkgrs gS ep>s I;kj djrs gS yksx ep>s bl Hkzed s lgkjs Hkh thus ugha nsrs- yksxksa dh utjksa esa n;k dk ik= cuk;k Ekk eSa- ,d fnu og Hkh Ekk tc buyM+ fd;ksa dh fuxkgs ge ij fVd tkrh Ekh- ij iUnzg dh l lkyksa us gj pht cny nh- Hkys gh ;s lkjh nqfu;k ls ;g dks ynwa fdep>s dksbZ nq%[k ugha- eSa ,d vktkn ifjnk gWw ftls dksbZ dkW/k ugha ldrk- ijUrq vkt ep>s ,slh tathjksa us dkW/kj D[kk gS ftls fdruk Hkh pkgWw ij rksM+ ugha ldrk- vkt esjh ftUnxh esa bruh rUgkbZ gS fd vcml s nwj djuk Hkh vlEHko yxrk gS vkSj blds dlwj dkj Hkh eSa gh gWw- eSaus viuh fny ds njokts dHkh dj ds viuh ftUnxh esa bruk vU/ksjk Hkj fy;k gS fd vktbl va/ksjs esa os knjoktk Hkh kfn[kkbZ ugha iM+rk] ftlseSa [kskyus dk iz;Ru Hkh djldWw- vkt eSa ftanxh ds bl eksM+ ij fdlh ls ugha dg ldrk fd ^rqe iqpkjyks^ rsjs fny dh vkokt u dcwy djds eSa cgqr iNrk jgk gWw- dqN jks tks ;wgh dh x;s ij ,d fnu esjh rfc;r dqN [kjkc lh gks x;h- HkkHkh dkM+s /kks jgh Ekh- esjs Hkh dqNeSys dM+s Fks- eSaus dks dM+s nsBk;s vkSj HkkHkh dks /kksus ds fy, fn;s- HkkHkh dks yhu Hkh jgus rks dk nes a/kks nwW Hkh v Hkh rks bUgha dk<s j yxk gS- nsk fnu rd eSa bUrtkj djrk jgk ysfdu esjs dM+ks dk u ac j ugha vk;k rks eSaus ccyh ls dM+s /kksus dks dgk- ccyh us >Vls euk dj fn;k- ep>s xqLlk vkx;k vkSj eSa xqLls esa gh dks yk tjk ls dM+s /kks us esa rwf?kl ugha tk,xh- nsk fnu ls dM+s iM+s gS- vUnj ls HkkHkh fpYykrh gqbZ dgj vk;h- ugha djrh rks u lgh- bruh tYnh iM+h gS rks /kks yks vius vki ls ;k fdlh ls /kqydkyksa- fdlh ls- ;g dkr lqudj eSa viuk xqLls ls vkik [kks cSBk- ftu ij eSaus vius thou dh dekbZ yqVkbZ ftUgsa bruk lq[k fn;k- pkj pkj gtkj dh lkfM+;k] iWp&iWp gtkj ds M™sl ftUgsa igus;s oks vkt esjk dke rd le; ls ugha djrs- ftugkFkks esa viuh dekbZ lkSirk jgk] og h yksx vkt dPpks a ds lkeus esjk vieku djsa- ;s dkr ep>s gteugha gqbZ vkSj Øks/k dh vkax esa WQwW iM+k& lkjh dekbZ rqe yksx [kkrs gks vkSj dM+s /kks;s dksbZ vkSj- vxj vki esjk dke djrh gS rks dksbZ ,glku ugha djrhA vfer rqe dek dj ykrs gks rks D;k gqvk- ge rqEgkjs uk Sdj ugha gS fudy tkvks b/kj ls vkSj djksa vkSj [kkvksa- gesa rqEgkjh dksbZ t:jr ugha gS- le>s rqe- eSa tks jls ph[kk HkkHkh] esjh topk blls vf/kd dqN u dg ik;h] iyd >idrs gh laukVk lk Nk x;k- eSa viuksa esa cs xkuk cu x;kEkk- /khjs /khjs esjh rfc;r fcxM+us yxh] eSa fcekj iM+ x;k- 'kk;n 'kkjhfjd jksxh ls vf/kd ekufld jksxh cu x;k Ekk- ifjokj ds yksx ukeek= dks ns[kHkky djrs Fks- eSa fdLrj ij yS Vk Ekk cq[kkj tjk de gks x;k rHkh vfHk"ksd vUnj vk;k vfHk"ksd dks ns[krs gh eSaus dgk vjs vfHk"ksd vkvks csVk- pkpw dSlh rfc;r gS vkidh- igys ls csgrj gS- pkpw vxj gks lds rks vki ml fnu dh ckr Hkwy tk;s Iyht- vki ml cgl dks fny ls u yxk;s- eSa vki ls muyksxksa ds O;ogkj dh ekWQh ekaxrk gwW vkSj vki ls dqN dguk Hkh pkgrk gwW- fny ls yxkuk rks ep>s vk;k gh a ugh vkSj vc D;k fny ls yxkmaxk- rqe tks Hkh dguk pkgrs gks fu lad ksp dgks- pkpw vki esjh ckr dks xyr ery crks ugha fudyksa xs- ml fnu ds >xM+s esa dkQh gn rd vki Hkh dlwjokj jgs- gkW 'kk;nesjhghxyrhEkh- ughapkpwigysvki iwjh ckr lwfu,- pkpw lcls igys rsk vius bl ifjokj ls vf/kd dqN ns[kk gh a ugha- eSa ekurk gwW fdekW] firkth vkSj ge lHkh vkids vius gSa ysfdu dksbZ ,d viuksa esa Hkh viuk gksrk gS] tks gekjh cqjkbZ;ksa dks Ldhdkj djrk gS- vxj vki ml s I;kj djsa rks xqLlk Hkh mls ns lds- vkius rks mlh vius ls viuk nkeu cpk dj j[kk- dqN vkxs ,slh gksrh gS ftu esa tytkuk gh csgrj gksrk gS vkSs jnUgha vkxksa esa ,d vkx gS 'kkrh- esjs fopkj ls rks ge lHkh dks fdlh ,sls vius dh ryk'k gksrh gS] ftls ge esa viuh t:jr topku ls C;ku u djuh iM+s dks Lo;a ek=k utjksa ls gh Hkki tk;s- gekjs fny dh gj vkjtw dk ml ds eu dks ,glkl gks ftnaxh esa ,slk rks dksbZ vius iklgks- tjk lksfp, pkpw] esjh ekavkidh HkkHkh igys viuk le; vksSj lsok vius ifr dks nsxh ;k nsoj dks- nsoj rks llqjky ds fj'rksa esa ls ,d fj'rk gS- mldk rks dsoy ifr vkSj dPpsa gh gksxs- dkdh fj'rksa dks rks yksx le>ds dkj.k fuHkkrs gSa- ysfdu vxj bu fj'rksa esa [kq'kfdLerh ls I;kj gks tk;s rks thou Hkh fudy tk;s- cl djsk vfHk"ksd vxj dks yrs gh jgs rks vUnj ls VwVk gqvk vfer dkgj fc[kj tk;sxk- vc dksbZ nkeu QSyk;s dks vkWpb gh ugh gS- vfHk"ksd vkt esjh le>esa vkx;k gS fd eSa dks 'kwU; gwW tks vadds nk;h vksj ugha cfYd ck;h vksj tksM+k tkrk gSA ftlds dksbZ egRo ugha gksrk- bruk dgj dj eSaus rfd;s ls fVd dj cSBrs gq, vka[ksa can dj yh- 'kk;n v'dks dks jksdus dkiz;kl dj jgk Ekk- rHkh vfHk"ksdesjs iSjksa ij gkEk j[krs gq, dksyk&pkpw Iyht ep>s ekQ djrks] esjk mn~ns'; vkidks nq%[k nsuk ugha Ekk- ugha vfHk"ksd rqe us rks vkt ep>s esjs thou dh gdhdr ls okfdQ djk;k gS- rqeus vkt esjh detksfj;ksa dks esjs lkeq[k j[kdj ;g lkfcr fd;k gS fd 'kk;n rqe lpeqp esjs vius gks AeSaus vfHk"ksd dks vius lhus ls yxk fy;k- fQj vfHk"ksd dks ykpkpw ep>s ,d ckr dgus dh rks ;kn gh ugha jgk- D;k ckr gS- fd'kksj vady dk Qksu vk;k Ekk- vki ls ckr djuk pkgrs Fks- ysfdu eSaus mUgsa crk fn;k fd vkidh rfc;r dkQh [kjkc gS- rqeus ep>s QksuD;ksa ugh fn;k- vki lks jgs Fks- eSaus vkidh uhan [kjkc ugha mfpr ugha le>k- eSaus eq[kdjkdj vfHk"ksd dks I;kj djrs gq, dgk& tkvks a csVk] vc rqe lks tkvks] dkQh jkr gks pqdh gS- vkscs] pkpw] eSa tkrk gwW- ij

vki fcuk doN lksps rs gq, vkjke djsaxs–gkW ckck! lo;a vfHk'ksd us vkdj eq>s pk; fiykbZ–doN iy chrs gh Fks fd folh ds dneksa dh vkgV vk;h–vkgV ds /kers gh tks lwjresjs lkeus vk;h] mls ns[k esjh vkW[ksa cqrcu x;h–lquk Fkk fd euch rM+i eu dks [khap ysrh gS–;k fQj ftanxh dh vkf[kjh vkjtw iwjh gks x;h–mls ns[krs gh vfHk'ksd mldh rjQ ps;jj [krs gq, dksyk&uEkrs vkaVh] cSfB;s–dks cSBgh gh Fkh fd fd'kskj vk x;k–vkrs gh eq> ij cjl iM+k–vfer] vxj eSa Qksu ugh djrk rks ges arks doN irk pyrk gh ugha–de ls de rw ,dQksu rks dj ldrk Fkk–vPNk NksM+ vc crk rq>s vkjke gS–gkW igys ls dkQh csgrj gwW rw cksy D;k fdlh dke ls Qksu fd;k Fkk–ßgkW dke rks FkkÞ fQj chuk dh rjQ ns[k dj dksyk&^vjs vfer rwus bls igpkuk ugha] vjs;s chuk gSA^ fd'kksj] vHkh bruscw<+s EkksM+h ugha x;s gq e] tks yksxksa dks igpkuk Hkwy tk;s–rHkh vfHk'ksd tkrs gq, dksyk&^pkpw eSa pk; ysdj vkrk gwW–^ vfHk'ksd pk; ysdj vkrk gS–pk; ihrs gq, fd'kksj dksyk] ^fcuk dh ,dcsVh gSmlh ds fj'rs ds flyflys esa vk;h gSa–lksp jgk Fkk fdyM+dk ns[kus rwHkh lkFk pyrk–blh dkr ds fy;s Qksu fd;k Fkk–ysfdu rsjh rks rfc;r Bhd ugha gS–^^dksbZ ckr ugha rsjh ilan gh esjh ilan gS vkSj ilan rks chuk dh gksu hpkfg,–^

doN le; ckn fd'kksj pyk x;k– le; chrrk jgk vkSj esjh gkyr lq/kjrh x;h–doN jkst esa eSa fcydqy Bhd gks x;k–ysfdu eq>s bl ckr dk [;ky ckj&ckj vk jgk Fkk fd chuk [kkeks'k vk;h vkSj [kkeks'k gh pyh x;h D;ksa\ de ls de esjk gky gh iwN ysrh–doN rks cksyrh] ftlds fy;s eu bruk csrkc Fkk–vkf[kj mlus ckr D;wa ugha dh–eSa rks mlds lkeus 'kCn gh ugha tkrk gwW ysfdu chuk rks ,slh ugha Fkh–ftl mZ ds lkFk me| dkVh gSmlh ds lkFk feVtk;s ugha—doNiy ds fy, gh lgh ysfdu chuk dks esjh cuuk gh gksxk– ,d ckj eSa mlls vius eu dh ckr dgwWxk rks 'kk;n eq>s 'kkfUr feytk;s–ysfdu D;k chuk vk;sxh\ bl lokyc dk tokc rks ogh ns ldrh gS–de ls de ckr djus ds fy, rks eq>s igy djuh pkfg,–thou esa ,d vkjtw vkSj tkxus yxh–mlh ls foo'k gks] eSaus chuk ls Qksu ij ckr dh–chuk feyus ds fy, rS;kj gks x;h–dkZ dk Qyrks dkZ djus ls gh feyrk gS– doN ?kaVks dkn chukesjs lkeus Fkh–

ßrqEgsa ns[kdj tq pkurks esjh poi gks tk;k djrh Fkh ysfdu rqe dc ls poi jgus yxh–Þ ßcksyus ds fy, doN gksuk pkfg, vfer–vxj dkr gh ugks rks 'kCn okgkW ls vk;s–rqe dgksa D;ksa cqyk;k Fkk eq>s–Þ ßigys rqe dgksa fdesjh dkr ij xqLlk rks ugh djksxh vkSj u cqjk ekuksxh–Þ ßHkyh yxus okyh dkr rks rqe dj gh ugha ldrs– tks dguk gS dg nks–Þ ßvkt ls cjlksa igys D;k rqe eq>s pkgrh Fkh–D;k rqEgkjs eu esa esjs fy, izse Hkko Fkk–Þ bruk lquo dj chuk Øks/k ls ph[k dj cksyh ßvfer] 'keZ ugha vkrh rqEgsa ,slh dkr djrs gq,–Þ ßchuk rqe xyr le> jgh gks–eSaus dhrk gqvk dy tkuuk pkgk gS–eSa rqEgkjs orZeku dk dksbZ uqdlku ugha d:xk–eSa rks flQZ bruk tkuuk pkgrk gwW fd D;k ml oDr dh oks chuk eq>s I;kj djrh Fkh–Iyht chuk esjh dkr dk tokc ns dj esjh pkgr dks iwjk dj nks–Þ ßD;k dks chuk rqe ls I;kj djrh Fkh] bl ckr dk tokc rks eSa Hkh Bhd ls ugah ldrh] ysfdu tc vkt fny ds bl jkt dks [kksyuk gh pkgk gS rks lquks vxj bl ckr dks rqe cjlksa igys iwNrs rks 'kk;n rqe ;wrUgk ugha gksrs–'kk;n dks chuk rqEgkjh ckWgksa esa tkdj rqEgkjs bl lokyc dk tokc ns nsrh–Þ chuk dh vkW[kks esa ikuh Fkk–og flldrh gqbZ cksyh&ßvfer rks ,d rjg ls cht gS tc rd dskbZ mls teh u esa cksdj ikuh a ugha nsrk rc rd dks vadwj cudj ugha mxrh–vkSj rqeus rks vius izse dh o'kkZ ml ij dh gh ugha–rqEgsa D;k Qjd iM+rk gS fd dksbZ rqe ls I;kj djrk gS–Þ bruk dgdj chuk vius vkWlqvksa jksdus dk iz;kl djus yxh–eSa vius v'dksa dks jsd ikrk ;sesjs o'k esa ugha Fkk–eSa VwVdj chuk dh xksn esa flj j[ks jks jgk Fkk–chuk us esjs flj ij gkFk fQjkrs gq, dgk&ßvfer] izse bUlku ds o'k esa ugha gksrk– ;s eu dc fdlds gks tk;s–D;k irk\ ;s rks bZ'oj dk fn;k ds uwj gS tks lcds Hkk X; esa ugha gksrk–Þ ß'kk;n eSa Hkh nqUkh esa ls ,d gwW–chuk us gh esjh ftn nds rksM+k–eq>ls eq>s D;Wk ugha Nhu fy;k–vkf[kj thou ds bl eksM+ ij eq>s D;w vkus fn;k\Þ ßukjh] doN ckrksa dh igy djus ds fy, iq:"k dk bUrtkj djrh gS vkSj izse dk btgkj Hkh ,slh djrgS–Þ

ßvkSj rqe us eq>Corr dks ftl izdkj vkt tkuk–eq>s aiky us ls rqe ugha tku ikrs–rqEgkjs vanj ds vfHkeku ij izse dh thr ugha gks ikrh–dHkh&2 ge izse h ds izse dk ,glkl mlds ikl jgus ds ctk; mlds nwj tkus ij dj ikrsgSÞ

ßchuk vkt vxj rqe ls doN ekaxw rks bUdkj er djuk–Þ ßesjs ifr ls c<+dj esjs fy, dksbZ ugha gks ldrk–mlds vf/kdkjksa dks NksM+dj rqe doN Hkh ekax yksÞ ßBhd gS– rqe eq>s viuh csVh ns nks–Þ chuk pkSd dj cksyh&ßD;kÞ ßvjs ckck—vfHk'ksd ds fy,–vfHk'ksd chuk [kq'k gks dj cksyh–Þ ßvxj vfHk'ksd dks mlds ekrk&firk dks dwy gks rks eq>s rks [kq'kh gksxh–vfHk'ksd eq>s ialn gSAÞ ßeSaus Hkh bZ;k ls ckr dj yh gS vkSj eSa vPNh rjg ls tkurk gwW fd vfHk'ksd esjs tSls xyrh dHkh ugha djsxk–chuk rqEgsa lkFkh u lgh le/ku ds fj'rs esa rks ikgh yw¡xk–Þ vfer vkt rqe us lgh le; ij lgh dkr dh gS– fQj Hkh vfHk'ksd ls iwNysrsA

bl 'kkrh ls cks bUdkj djsa]

;sgks ugha ldrkA

गुप्त रोग ताकत जवानी

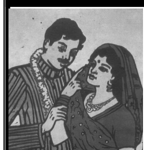

गुप्त रोगों के शर्तिया ईलाज हेतु आज ही मिलें

सेक्स या शुक्राणु समस्या ग्रसित रोगियों का निदान सम्भव

नोटः ध्यान रहे, सही समय पर सही प्रयास और उचित इलाज ही रोगी को ठीक कर सकता है, गारण्टी नहीं। बल्कि सफल इलाज करवाकर रोग को जड़ से समाप्त करें।

मिलने का समयः

प्रातः 9 बजे से रात्रि 8बजे तक, रविवार को प्रातः 9 बजे से 2 बजे तक।

नोट : उत्तर भारत में हमारी कोई शाखा नहीं है।

हमारे यहॉ आधुनिक तरीके से तैयार युनानी + आयुर्वेदिक पद्धति द्वारा सरल एवं सफल इलाज करवा के हर मौसम में बगैर किसी नुकसान के लाखों निराश रोगी नया जीवन पा चुके हैं। हमारे इलाज के तरीके का लोहा सर्वश्रेष्ठ गुप्त रोग विशेषज्ञ भी मानते है।

vkf[kj xqIr jksx gS D;k\ ftls ?kj dy;ksa ls xqIr] ikl&iM+ksLls xqIr fe=ksa ls xqIr] ;gk¡ rd fd iRuh ls Hkh xqIr j[kk tk;s] D;k xqIr jksx dksbZ leL;k gS\ D;k xqIr jksx NqvkNwr gS\ ;k fQj xqIr jksx Hkwr&izsr gS\ vxj vki esa ls vkids tkus dy;ksa esa ls ijs'kku gS rks d`i;k dksbZ Hkh ,slk lq>ko uns] ftlls jksxh ?kcjk gV ;k ijs'kkuh gks dj vktdy ds yq[kkous a izpkjksa tSls xkj.Vh vkS j pUn fnuksa ds vUnj Bhd djus dk nkok djus tSls izpkjksa ij /;ku nsus yxtk;s vkSj dk nesa viuk iwjk thou va/ ksjs esa aa fcrkus ij etcwj gks tk;saA ,sls jksfx;ksa ds fy, **ßU;w gsYFk Dyhfudß** ds izfl) fo'ks"kK MkWDVj dk e'kojk gS fd ;fn vki uiqalrk] 'kh?kz iru] LoIunks'k] /kkrq jksx] is'kkc esa tyu lq[kh] dennZ] isV jksx] xehZ lqtkd tSls vkfn jksxksa dk f'kdkj gks pqds gksa vkSj txg&txg byktk ds ckn Hkh lQyrk u feyh gks rks vkt gh **ßU;w gsYFk Dyhfudß** esa vkdj **MkWDVj ,e-vkj-'kkgh** xo.kZesaUV jftLVMZ lsDlLis'kfyLV ls feydj lj y ,oa lQy bykt djokdj oSokfgd thou dk Hkjiwj yqRQ mBk;saA

न्यू हेल्थ क्लीनिक

सेन्ट्रल होटल बिल्डिंग (डा0 झा के ठीक सामने), घंटाघर चौराहा, इलाहाबाद

दर्पण

हाय हमारी ये सरकार, इसकी माया अपरम पार।
बिजली पानी कहीं नहीं हैं, मचा हुआ है हा हा कार।
दलित व पिछड़े वर्ग की रक्षक, कहती खुद को बारम्बार
आज भी भूखें नंगे फिरते, नहीं हुआ इनका उद्धार।
मंत्रीगण है मौज मनाते, माफियाओं से इनके नाते
लाखों से आगे बढ़कर हैं, देश विदेश में इनके खाते।
इसे हटाओं; उसे भगाओं, इस सरकार का काम यही है
सच्चाई से काम न करना, वरना फिर अंजाम यही है।
कभी ये रैली, कभी वो रैली, भरती रहती इनकी थैली
कोई डिटरर्जेन्ट काम करे ना, इनकी चादर इतनी मैली।
कोई पत्रिका आज उठा लो, या फिर ले लो तुम अख़बार
एक ही मुद्दा तुम्हें मिलेगा, दुराचार या भ्रष्टाचार।
मंदिर, मसजिद लेकर लड़ते, बना से वोटो का आधार
पहले खुद को योग्य बना लो, फिर खोलो तुम इनके द्वार।

प्रोफेसर एस.के. लिडिल
इविंग क्रिश्चियन कॉलिज, इलाहाबाद फोन 2414340

सकारात्मक चिन्तन की अपरिहार्यता

आपकी जुबान

महोदय, सितम्बर माह में प्रकाशित पं0 हरिमोहन मालवीय का लेख 'सकारात्मक चिन्तन की अपरिहार्यता' काफी पंसद आया। लेखक का यह विचार कि युग–परिवर्तन के साथ नयी–नयी समस्याएं जन्म लेती जा रही हैं। वैज्ञानिक और औद्योगिक क्रांन्ति, मानव रही हो या राजतन्त्रा के बरवक्स लोकतांत्रिक क्रान्ति, मानव ने परिवर्तन के साथ अपने तेवर बदले है और अमानवीय व्यवस्थाओं का उच्छेदन करके नवयुग की स्थापनाओं और मान्यताओं को अपरिहार्य बनाने का आग्रह और प्रयत्न किया है।' आज वास्तव इस बदले माहौल में एक क्रान्ति की जरूरत है। आज जो माहौल है वह एक क्रान्ति को दावत दे रहा है। पत्रिका शेष लेख व कहॅनिया काफी पंसद आयी। पत्रिका में पहले से काफी सुधार हुआ है। अब यह अपनी यौवानावस्था की ओर दिन प्रतिदिन अग्रसर है। इसके लिए पत्रिका परिवार को हार्दिक बधाई।

राकेश सिंह
प्रधानाचार्य, एस.बी.इंटर कॉलेज, गाजीपुर, उ0प्र0

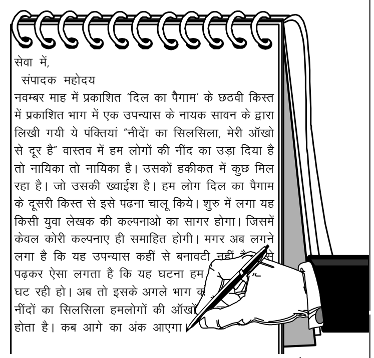

एक युवा क्रांति का धोतक है–'दिल का पैगाम'

सम्पादक महोदय,

सितम्बर माह में प्रकाशित धारावाहिक उपन्यास 'दिल का पैगाम' के तेरहवी किश्त को पढ़कर ऐसा लगा कि यह उपन्यास केवल उपन्यास या कहानी नहीं बल्कि एक युवा क्रांति को लाने को ध्यान में रखकर लिखा गया है। उपन्यास के इस अंश में प्रकाशित सम्मेलन के प्रश्न जैसे–युवक–युवतियों के बीच यौन आकर्षण यानी प्रेम और फिर प्राकृतिक यौन सम्बंधों के स्वाभाविक निर्वाह को नैतिक माना जाए या प्रकृति के विरूद्ध इनके अस्वाभाविक नकार को? आज क्रांतिकारी लेखको की ही जरूरत है। हमें उम्मीद है कि लेखक महोदय इसे एक किताब के रूप में भी अवश्य प्रकाशित कराएंगे।

रजिया, सुल्ताना एवं राधा
गोरखनाथ मंदिर के पास, गोरखपुर

पाठकों से अनुरोध

सभी पाठकों से विनम्र अनुरोध है कि उनकों पत्रिका कैसी लगी। पत्रिका में क्या कमियॉ है, क्या और डाला जाए क्या हटाया जाए आदि के बारें अपने विचार हमें निरन्तर भेजते रहें। आपके विचार ही हमारी सर्वोत्तम पूजीं है। **संपादक**

क्यों होते हैं बाल सफेद?

पुरानी पीढ़ी अक्सर अपने अनुभवों का तकाजा देकर नई पीढ़ी को यह ताना मारती है कि हमारा कहा मानो, हमने यूँ ही धूप में अपने बाल सफेद नहीं किए हैं। नई पीढ़ी मन मसोसकर रह जाती है। बेचारी क्या करे। उसके पास इस तर्क का कोई काट नहीं होता। युवा सोचते होंगे आखिर समय के साथ कैसे हो जाते हैं बाल सफेद? खैर, इन दिनों तो बालों का सफेद होना अच्छा नहीं माना जाता। उसे किसी शारीरिक कमजोरी के रूप में देखा जाता है। परंतु सच्चाई क्या है? इस बारे में विज्ञान क्या कहता है? आइए देखें। बालों में तथा त्वचा में एक काला या भूरा वर्णक उपस्थित होता है जिसे मिलेनिन कहा जाता है। मिलेनिन का निर्माण बालों की जड़ों में तथ त्वचा की बाहरी परत या इपीडर्मिस की तह में स्थित मिलेनोसाइट कोशिकाएँ करती हैं। मिलेनोसाईट इस वर्णक को पास की अन्य इपीडर्मिस की कोशिकाओं को, जिन्हें किरोअिनोसाइट कहा जाता है, हस्तांतरित कर देती हैं। किरेअिनोसराइट कोश्यिाकरएँ किरेटिन नामक प्रोटीन निर्मित करती हैं। यही प्रोटीन बालों का मुख्य पदार्थ होता है। किरेटिनोसाइट कोशिकाओं की स्वाभाविक मृत्यु के बाद भी इनमें मिलेनिन बना रहता है। अतः हमें बालों का एवं त्वचा का जो रंग दिखाई देता है वह इन्हीं मृत किरेटिनोसाइट कोशिकाओं की देह में उपस्थित मिलेनिन की वजह से होता है। मिलेनिन वर्णक के निर्माण के नियंत्रण की प्रक्रिया काफी जटिल है तथा मिलेनिन निर्माण त्वचा एवं बालों में भिन्न तरीके से संपादित होता है। आनुवांशिक कारण भी इसे स्पष्ट रूप से प्रभावित करते हैं। हाल ही में बालों के रंग के लिए जिम्मेदार एम.सी.आई.आर. नामक एक वंशाणु या जीन की खोज की गई है। अब यह समझना आसान है कि मिलेनिन की अनुपस्थिति में बाल सफेद तथा मिलेनिन की कमी के कारण भूरे दिखाई पड़ते है। हमारे गोरे और काले होने का भी यही कारण होता है। इपीडर्मिस की कोशिकाओं में मिलेनिन के कम या अधिक निक्षेपण का निर्धारण अन्य सभी दैहिक लक्षणों के समान वंशाणुओं द्वारा ही संपन्न किया जाता है अतः यह पीढ़ी–दर–पीढ़ी वहन होता है उदाहरण के लिए कई बार यह देखने में आता है कि कुछ परिवारों में कुछेक सदस्यों के बाल बीस– पच्चीस वर्ष की उम्र में ही सफेद होना प्रारंभ हो जाते हैं। हालांकि अभी यह स्पष्ट तौर पर नहीं कहा जा सकता है कि बाल अपने वर्णक क्रमशः कैसे खोने लगते हैं। बाल सफेद होने के आरंभिक चरण में बालों की जड़ों में मिलेनोसाइट कोशिकाएँ उपस्थित तो रहती है पर निष्क्रिय होती है। बाद में इनकी संख्या में उत्तरोत्तर कमी आती जाती है और बाल सफेद होने लगते हैं, परंतु इस सफेदी का किसी प्रकार की बीमारी से कोई संबंध नहीं होता है। यह भी तय है कि बाल यूँ ही धूप में सफेद नहीं होते ।

रक्त संचार को सुचारू बनाती है मालिश

'kq)dkj dks dM+os 'kq) ljlksa ds rsy ls tuukaxksa oxqIrkaxksa dh ekfy'k dh pkfg, rFkk 'kfudkj dks ljlksa ds rsy ;k ?kh ls iSj dh rFkk fiaMfy;ksa dh ekfy'k djds bu vaxks dks iq"V cuk;k tk ldrk gSA ;g 'kkL=ksa d fof/k gSA ekfy'k dh 'kq:vkr fdl rjg rFkk 'kjhj ds fdl vax ls gh dh tkuh pkfg,] ;gHkh ,d egRoiw.kZ ckr gSA rsy ;k ?kh ls Hkkxh gFkk dh maxfy;ksa ls /khjs&/khjs jxM+rs gq, Nkrh ls ekfy'k dh 'kq:vkr gksuh pkfg,A pwafd ;g fgLlk 'kjhj ds dsUnzh; {ks= esa gS vkSj ÅtkZ blh {ks= esa fLFkr gS] vr% bl Hkkx dh ekfyl vPNh rjg gksuh pkfg,A yksx lkcqu dk iz;ksx va/kk/kqa/k djrs gSa] ijarq rsy yxkus ds gs;n`f"V ls ns[krs gSaA /;ku nsus ;ksX; ckrsa&ekfy'k dk lIFkku [kqyk ogknkj gksuk pkfg,A ekfy'k ds rqjar ckn ,;j daMh'ku ;k ia[ks ds uhps ugha tkuk pkfg, vkSj ugh Luku djuk pkfg,A ekfy'k ds de ls de ,d ?kaVs ckn gh 'kjhj dks vPNh izdkj eydj Luku djuk pkfg,A ekfy'k ls vk, ilhus ds rqjar ckn Luku djus ls cqtuesa tknqbZ :i ls dehvkrh gS] ijarq ,slk ogh djsa fturk 'kjhj rqjar gksus dys cnyko dks lgus dh {kerk j[krk gksA ekfy'k djus ds rqjar ckn ikuh ugha ihuk pkfg,] ijarq ekfy'k ds rqjar ckn is'kkc djus ls 'kjhj ds fodkj is'kkc ds jkLrs fudy tkrs gSaA

पत्रिका के लिए सम्पर्क करें:

पापुलर बुक डिपों

इलाहाबाद गर्ल्स डिग्री कॉलेज, कैम्पस, जीरो रोड बस अड्डा के पास, इलाहाबाद

लक्ष्मी बुक हाउस

सिविल लाईन्स, इलाहाबाद

मि0 कमलेश कुमार

नन्दनी बुक सेन्टर बाई का बाग, इलाहाबाद

समसामयिक एवं महत्वपूर्ण वाद

वैवाहिक मामलों में समझौता होने पर फौजदारी के मामले समाप्त कर दिये जाने चाहिए.

mPpre U;k;ky;

&2003]51 ,-,y-vkj-222 dh-,l-tks'kizfrgfj;k.kk jkT; ukeatkn

rF;& nksuksa i{kksa esa iki frikuhds/; fookg ds ,d o"kZ dk>xMk smRiUu gks x;sA dqN le; dh nfus iksa i{kksa esa ikjEifjd le>kSrs ds vk/kkj ij rykd gks x;kA rykd gks tkus ds ckn Qkstnkjh ds ekeys esa iRuh us ;g 'kiFki= fn;k fd ifr ls mlds fookn lekIr gks x;k gS A vkSj ;g ekeyk lekIr dj fn;k tk;s ysfdu Qkstnkjh ds U;k;ky; us ekeys lekIr ugha fd;sA mPp U;k;ky; us Hkh fjiksVZ fuj Lr djus ls bUdkj dj fn;kA mPpre U;k;ky; esa bl ekeys esa vihy dh x;hA

fu.kZ; &mPpre U;k;ky; us fjiksVZ] ifjokn oQkstnkjh ds eqdnesa fujLr djus ds fl)kUr ksa ad h fdlr `r foospuk dh vkSj vius fu.kZ; esa fy[kk dh /kkjk 498 , dk mn~ns'; ifr vkSj mlds mufj'rsnkjksa ad ks nf.Mr djuk gS tks iRuh ;kmuds fj'rsnkjksa dks ngst ysus ds fy;s izrkfM+r djrs gSaA ysfdu tgka nksuksa i{kksa esa le>kSrs gks x;s gS og ka rd dh dk/kk;sa le>kSrs es ad k/kd ugha cuuh pkfg,A ckSckfgd ekeyksa esa U;k;ky;ksa dk dr'O; dk Ir fd le>kSrs dks izksRlkfgr dk iz;kl djds Qkstnkjh ds eqdnesa] izFke lwpuk fjiksVZ] ifjokn fujLr djlds rk gSA

izfrikfnr fl)kUr& mPpre U;k;ky; us vius mDr fu.kZ; esa ;g fl)kUr izfrikfnr fd;k fd oSokfgd ekeyksa esa le>kSrk gks us ij Qkstnkjh ds ekeys lekIr dj fn;s tkus pkfg,A

;fn izR;{kn'khZ lk{kh x.k dk ifjlk{; fo'oluh; ugha gks rc vfHk;qDr dks vijk/k ds fy;s nks'kfl) ugha fd;k tk ldrk gSA

mPpre U;k;ky;

2003] ist 447] n-fu-l-

cynso ,oa vU; cuke e/; izns'k jkT;

¿nkf.Md vihy la[;k 275 o"kZ 2001À fnukad 6&1&2003 dks fofu'pr

fu.kZ;& Hkkjrh; n.M lafgrk] 1860& /kkjk 302&ds v/khu gR;k ds vijk/k ds fy;s nks'kfl) &S/krk&ekeys dks izR;{kn'khZ lk{kh x.k ds ifjlk{; ij vk/kkfjr&nksuksa izR;{kn'khZ lk{kh x.k ,oa vfHk;qDr ,fd fj;ksa ds ifjokj ds e/; dk Qh fnuksa ls ng'keuh &D'kkutjh lk{kh x.k dh lkoh fdy ksa ,oa >kM+;ksa ad h mifLFkfr izn f'kZr ugha dj ikrh Fkh &,l-,p-vks-}kjk izkIr Vsyh Qksu lUns'k dk dksbZ vfHkys[k ugha&{ks=h; efTLVsªV ds iklizFke lwpuk fjiksVZ dh izfr Hkstus esa ng; foyEc okadks bZ Li"V hdj.k ugha&nksuksa izR;{kn'khZ lkf{k;ksa ad kdFkulR; ugha ik;k x;k&nksuksa la;ksxh lk{kh x.k&lk{kh x.k ds ?kVukLFky ij ekStwn gks us dk dksbZ Bksl dkj.k izn f'kZr ugha&buksa nksuksa lk{kh x.k ds ifjlk{; fo'oluh; ugha&vfHk;qfDr /kkZ fjr] bu nksuksa lk{kh x.k ds ifjlk{; ds vk/kkj ij nksuksa vfHk;qDr x.k&vihykFkhZx.k dh nks'kfl) eku; ugha dh tk ldrh gS&nks"kfl) vikLr&vihy vuqKkrA

Hkkjr ds lafo/kku ds vuqPNsn 226 ds v/khu fjV vf/kdkfjrk esa mPp U;k;ky; Hkkjrh; n.M lafgrk dh /kkjk 406 ,oa 409@ds v/khu vijk/kksa ds fy;s vkjksfir fd;s x;s vihykFkhZx.k dks fxj¶rkj djus ds fy;s jkT; dks funZs'k ugha dj ldrk gS u gh og vUos'k.k ,tsUlh dks vjksi&i= nkf[ky djus dk funsZ'k ns ldrk gSA

mPpre U;k;ky;

ist 395] n-fu-l-

,e-lh-vczkge ,oa vU; cuke egkjk"Vª jkT; ,oa vU; ¿nkf.Md vihy la[;k 1346&1352 o"kZ 2002 À

fnukad 20&12&2002 dks fofu'pr

fu.kZ; &n.M izfØ;k lafgrk] 1973&/kkjk 406 ,oa 409@34&Hkkfo"; fuf/k vk;qDr }kjk ,e-,-ih-,y-ds funs'kdksa ad s fo:) ifjokn&tlesa /kkjk 406,oa 409@34 ds v/khu vijk/k dk vfHkdFku fd;k x;k Fkk&n.M izfdz;k lafgrk dh /kkjk 438 ds v/khu vfxze tekur vkosnui= vLohd`r&ifjokn ij dk;Zokgh djus ds fy;s jkT; ds fo:) fjV ;kfpdk&mPp U;k;ky; us jkT; ds ,e-,-ih-,y-ds funs'kdksa ad ks fxj¶rkj djus ,oa vUos'k.k vfHkdj.k dks vkjksi&i= nkf[ky djus dk funsZ'k fd;k Fkk&mPpre U;k;ky; ds le{k vihy&vfHkfu/kkZfjr] mPp U;k;ky; dk n`f"Vdks.k mfpr ugha&vihy vuqKkrA

fufnZ'Vdkn& 1980 ¿1À ,l-lh-lh-554-1994 ,y-vkj-71 vkbZ-,-203-1970 ¿3À ,l-lh-vkj-946-,-vkbZ-vkj-1968 ,l-lh-117A

आवश्यक सूचना :

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार, प्रकाशक या संपादक का इससे कोई लेना देना नहीं होगा। विवाद के संदर्भ में न्यायलीय क्षेत्र इलाहाबाद होगा।

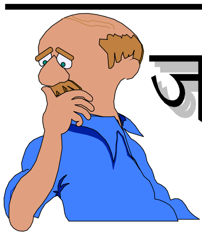

जरा हंस दो मेरे भाय

☠(नौकरी के लिए आई लड़की से इंटरव्यू लेते हुए)–आप हमारी फर्म में नौकरी क्यों करना चाहती हैं?
लड़की–जी बात यह है कि घर में बच्चों के शोर के चलते मैं सो नहीं पाती.

☠अपने बच्चे के साथ जैसे ही एक खूबसूरत महिला बस में चढ़ी, बस का ड्राइवर उसके बच्चे को देखते ही चीख पड़ा–'मैंने इतना गंदा बच्चा अपनी जिन्दगी में नहीं देखा.' उसकी बात सुनकर महिला दुखी हो गई. जैसे ही वह अपनी सीट पर बैठी, बगल में बैठे एक यात्री ने उसकी परेशानी पूछी. महिला ने दुखी स्वर में कहा कि ड्राइवर ने मेरा अपमान किया.
'अच्छा! आप भी उसका अपमान कर दीजिए. तब तक मैं आपके इस बंदर को संभालता हूँ.'

☠डॉक्टर (मरीज से)–आप नाश्ते में क्या खाती हैं?
मरीज– परेशान मत होइए, आप जो मंगाएंगे मैं खा लूंगी.

☠कोर्ट में कार पार्क करते समय वकील की कार एक दूसरी कार से टकरा गई. बौखलाहट में वकील दूसरी कार वाले पर बरस पड़ा.
'तुमने मेरी नई गाड़ी तोड़ दी, अब इसका हर्जाना कौन देगा?'
'माफ कीजिए लेकिन आप बड़े ही भौतिकवादी हैं. क्या आपको पता है कि टक्कर में आपके बाये हाथ में भी चोट आ गई हैं. मुझे गाड़ी की नहीं आपकी चिन्ता हैं'.
वकील ने अपना बाया हाथ देखा और चीख पड़ा–'अरे, मेरी घड़ी भी टूट गई. तुम्हें इसका भी हर्जाना देना होगा'.

☠ मृत्युशैया पर पड़े एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी से बड़े भावुक अंदाज में कहा कि 'प्रिय, मुझे माफ कर देना. मैंने जीवन भर तुम्हें धोखा दिया. पूरी जिन्दगी मेरे कई–कई महिलाओं से संबंध रहे और मैंने तुम्हें हमेशा यही कहा कि तुम्हारे अलावा मैं किसी को नहीं चाहता.' पत्नी थोड़ी देर शान्त रही, फिर धीरे से बोली–'मुझे सब मालूम था लेकिन तुम यह मत समझना कि मैंने इसीलिए तुम्हें जहर दिया'.

चौक का दाम अब सिविल लाईन्स में
खुल गया कपड़ो का भव्य शो
स्टूडेन्ट्स टेलर्स, शगुन चौक की नई भेंट
कलेक्शन
THE REVISIT SHOP
Raymond
मीना बाजार के सामने, सेल्स टेक्स आफिस के नीचे सिविल लाईन्स, इलाहाबाद
फोन : 2608082

☠ चोर(दूसरे चोर से)–यार, क्या बात है आज बड़े खुश दिख रहे हो?
पहला चोर–सब गुरूजी की इस माला का कमाल है. जहॉ भी जेब काटने जाता हूं, सफलता हाथ लगती है.
दूसरा चोर–अच्छा, तो क्या गुरूजी ने ये माला तुम्हें मुफ्त में दे दी.
पहला चोर– छोड़ो यार, मुफ्त में तो आजकल कोई जहर भी नहीं देता. इसे तो मैंने उन्हीं की जेब से पार किया है.

☠ दुर्घटना में घायल एक व्यक्ति के होश में आने पर डाक्टर ने उससे कहा कि तुम्हारे लिए दो खबरे हैं. एक अच्छी और एक बुरी. बताओं तुम पहले कौन सी खबर सुनना चाहोगे?
'पहली बुरी खबर सुनाइए'–मरीज बोला.
'बुरी खबर यह है कि बस दुर्घटना में तुम अपने दोनों पैर खो बैठो हो.' मरीज चीखकर अपने पैरों को देखने लगा।
'और अच्छी खबर यह है कि बगल के वार्ड के मरीज ने तुम्हारे जिन्दा बचने पर तुम्हें चप्पलों का एक जोड़ा भेंट किया हैं.

bl LrEHk esa vki Hkh vius ialn ds Lojfpr pqVdqys Hkst ldrs gSA vPNs pqVdqyksa dks iqjLd`r Hkh fd;k tk,xkA

माह सितम्बर के व्रत, त्योहार एवं साईत

पं0 शम्भू नाथ मिश्रा

2.10 **गुरूवार** : सप्तमी, भद्रा सायं 5.36 से रात्रि 4.34 तक. अन्नपूर्णा परिक्रमा सायं 5.36 से. महात्मा गॉधी जयंती.

3.09 **शुक्रवारः** अष्टमी। महाअष्टमी व्रत, अन्नपूर्णा परिक्रमा दि. 3.33 तक। महानवमी व्रत.

4.10शनिवारः नवमी. नवमी में होमादि. नवरात्रि समाप्ति. दसमी में नवरात्रि व्रत की पारण.

5.10,**रविवारःदसमी**, श्रवण नक्षत्रा रात्रि 11.12 तक. विजयादसमी. श्री दुर्गा विसर्जन. नील कण्ठ दर्शन. शमी पूजा. अपराजिता पूजा. श्रवण में सरस्वती विसर्जन. रवि योग रात्रि 11.12 तक

6.10,**सोमवारः** एकादशी, पापाकुंशा एकादशी व्रत सबका. पंचक आरम्भ दिन.11.09 से. भरत मिलाप.

7.10, मंगलवारः द्वादसी, भौम प्रदोस व्रत. ऋण मुक्त के लिए.

9.10 गुरूवार–चतुर्दसी, शरद पुर्णिमा व्रत की पूर्णिमा, कोजागरी 15 लक्ष्मी इन्द्र, सर्वार्थसिद्ध योग रात्रि 1.39 से। उसके पहले रिक्ता तथा भद्रा है।

10.10 शुक्रवार, पुर्णिमाः पंचक समाप्ति रात्रि 3.28 पर. स्नान दान की पूर्णिमा. सर्वार्थसिद्धियोग. अमृत सिद्ध योग रात्रि 3.28 तक. परन्तु चन्द्रमा में मुक्त न होने से शुभ नहीं है।

कार्तिक कृष्ण पक्ष

11.10 शनिवार, एकमः चातुर्मास्य व्रती को कार्तिक मास में दाल खाना वर्जित है, लक्ष्मी सहित विष्णु को पलंगपर रखकर पूजन करने से अक्षय धन दाम्पत्य सुख प्राप्त होता है. चित्रा सूर्य सायं 6.29. पूर्व को छोड़कर अन्य दिशा की यात्राा का मुहुर्त है।

13.10 सोमवार, तृतीयाः भद्रा सायं 5.22 तक. संकष्टी करक श्री गणेश चतुर्थी व्रतम्. चन्द्रोदय रात्रि 7.26 बजे काशी में.

14.10 मंगलवार, चतुर्थीः सवार्थ सिद्ध योग दिन 10.40 तक. सभी कार्यो के लिए शुभ. रोग विमुक्त स्नान मुहुर्त.

15.10,बुद्धवार, पंचमीः सवार्थ सिद्ध योग समस्त. सभी कार्यो के लिए शुभ.

17.10 शुक्रवार, सप्तमीः भद्रा दिन 11.59 तक. सर्वार्थ सिद्ध योग सायं 5. 48 से.

18.10 शनिवार, अष्टमीः अहोई 8व्रत. चन्द्रोदय रात्रि 11.22 बजे. राधा जयन्ती.

19.10 रविवार,नवमीः पुष्य नक्षत्रा. सौर कार्तिक मासआरम्भ. सर्वार्थ सिद्ध योग रात्रि 8.35 तक. रोग विमुक्त स्नान मुहुर्त.

21.10 मंगलवार, एकादशीः रम्भा एकादशी व्रत सबका.

22.10 बुद्धवार, द्वादशीः गोवत्स द्वादशी.

23.10 गुरूवार, तेरसः धन त्रायोदशी, भद्रा 10.55 से। धनवन्तरि जयन्तीदसमी श्राद्ध। दिन 10.26 के बाद रात्रि 11.36 से पहले पश्चिम–उत्तर दिशा की यात्राा का मुहुर्त है।

24.10 शुक्रवार, चतुर्दशीः स्वाती का सूर्य रात्रि 4.09 बजे. नाग पंचक प्रारम्भ. हनुमत् जयन्ती.

25.10 शनिवार, अमावस्याः स्नान दान श्राध की अमावस्या दीपावली। सायं देव मन्दिरों में दीपदान. लक्ष्मी इद्र कुवेर आदि देवताओं की पूजा मध यरात्रि में महाकाली पूजा सर्वार्थ सिद्ध योग सायं 6.1 से.

कार्तिक शुक्ल पक्ष

26.10 रविवार : अन्नकूट, गोवर्धनपूजा।

27.10. सोमवार : द्वितीया, यमद्वितीया, मातृद्वितीया, भईयादुईज, बहन के घर भोजन इत्यादि से भगिनी पूजन, सर्वार्थ सिद्धियोग दिन0 2.51 से। (पूर्व को छोड़कर 2.51 के बाद अन्य दिशा की यात्राा) व अन्यशुभ कार्यो का मुहुर्त।

28.10 मंगलवारः तृतीया, वैनायिकी श्री गणेश चतुर्थी व्रत। सूर्य षष्ठी व्रत आरम्भ।

29.09 बुद्धवार, चतुर्थीः सूर्य षष्ठी व्रत का दूसरा दिन।

30.10 गुरूवारः पंचमी–षष्ठी,सांयकल सूर्य को अर्ध्य दान. रात्रि शेष में द्वितीया अर्ध्यदानं. स्कन्ध षष्टी व्रत।

1.11 शनिवारः अष्टमी, गोपाष्टमी, गायों को अलंकृत करके पूजन सर्वार्थ सिद्धयोग दिन 7.46 से

2.11 रविवार, नवमीः पंचक प्रारम्भ सायं 6.59। अक्षय नवमी, ऑवला वृक्ष के नीचे भोजन।

4.11 मंगलवार, एकादशीः भद्रा दि0 11.48 से रात्रि 12.47 तक. हरि प्रवोध ानी एकादशी. भद्रा, भद्रा से पूर्व ईख रसपान।

5.11 बुद्धवार, द्वादसीः तुलसी विवाह, दालदान, चातुर्मास्य व्रत समाप्त।

6.11 गुरूवार, तेरसः प्रदोष तेरस व्रत. सर्वार्थ सिद्ध योग

7.11 शुक्रवार, चतुर्दशीः विशखा का सूर्य दिन 11.15. श्री वैकुण्ठ चतुर्दशी व्रत. अर्धरात्रि में महाविष्णुपूजा। पंचक समाप्ति दिन 10.44.

8.11 शनिवार, पुर्णिमाः स्नानदान व्रत का कार्तिकी पूर्णिमा. गुरूनानक देव जयन्ती, कार्तिकेय दर्शन, सर्वग्रास चन्द्रगहण, स्पर्श रात्रि 5 बजकर 2 मिनट पर। मोक्ष 9.11 को दिन 8.35 पर मोक्ष. कार्तिक स्नान आदि।

डेढ़ लाख में बिकेंगे नकली कान

dqN lky igys lVkj Vs"dukWykWth daiuh ds foKkfud gj ?kjesans[kkAvarfj{kesaeqlhorksadk lkeuk djrs gq, lVkj Vs" dk dnyn'kZdksa ds jksaxVs [kM+s djnsrk FkkA /kkjkokfgd ds ik=ksa esa ls yacs dkuksa okys feLVj Liksd dk fdjnkj lHkh dks ;kn gksxkA gkykWgesa vkbZ fQYe lVkj Vs"dlsHkhfeLVjLiksd dkQh yksdfiz; gq, FksA fo'ks'k :i ls rS;kj dh xbZ mudh bl Mªsl vkSj yacs dkuksa dh vxys gQ~rs uhykeh gksus okyh gSA mu ds IykfLVd vkSj Qkbcj ls cuk, x, ;g dku djhc Ms<+ yk[k esa fcdus dh mEehn gSA uhykeh djkus okyh daiuh lksFkch bu dkuksa ds vykok dbZ vU; phtksa dh Hkh dksyh yxk,xhA bleas gSjh iksVj fQYe ls tqM+h dqN lkeku Hkh gksaxsA

खाने के तेल से दौड़ेंगी गाड़ी

tkikuh daiuh fgVkph tksls uckWjiks js'kus bLrseky fd, x, [kk| rsykaks fjlkbfdy djdkW;ksMhty cukus esa lQyrk izkIr dh gSA

dkW;ksMhty i;kZoj.k ds vuqdwy gS vkSj ;g dkrkoj.k esa vkeMhty ds eqdkcys de /kqavk vkSj nwljs izrw"kd d.k mRlftZr djrk gSA daiuh ds vf/kdkfj;ksa dk dguk gS fd vizSy 2004 ls D;ksVks uxj fuxe bl bZ/ku dk bLrseky 'kq: dj nsxkA Q 'kgj esa pyus okyh xkfM+;ksa blu, bZ/ku ls pysxhA D;ksVks izksVks dkWy ds eqrkfcd dkW;ksMhty [kk| rsykas ls rS;kj gksxk] blfy, bl ls mRlftZr dkcZu MkbZ vkWDlkbM ds xzhu gkml xSl ugha ekuk tk,xkA D;ksVks uxj fuxe dk ekuuk gS fd bl bZ/ku ds bLrseky ls 'kgj esa dkcZu MkbZ vkWDlkbM ds mRltZu esa gj lky pkj gtkj vu dh deh gksxhA fQygky uxj ?kjksa ls bLrseky rsy bdV~Bk djjgk gSA blh ls futh {ks=ksa esa fjlkbfdy djdkW;ksMhty cuk;k tk jgk gS] ftlls rdjhcu gj jkst rhu lkS xkfM+;ka py jgh gSA uxj fuxe 42 djksM+ ;su dh ykxr ls 2004 rd dkW;ksMhty la;a= cukus dh ;kstuk ij dke dj jgh gSA blls gj jkst ikap gtkj yhVj dkW;ksMhty rS;kj gksxkA

पति का कान काट हाथ में थमा दिया

rsgjkuA iq:"k jkrdks nsjh ls vk, rks cgqr ghdeifRu;ka ckydj rh gSaA ysfdu ok bZ Hkh ifr ;gdrbZ ilan ugha djsxk fd mldh iRuh jkr dks nsj ls ?kj igqapsA nf{k.kh rsgjku esa ,s,sls gh ifr ds vi uk dku xaokuk iM+kA bl ifr us flQZ bruk gh iwNk Fkk fd og jkr dks nsj ls D;ksa vkbZA efgyk us ifr dk dku dkV dj mlds gkFk esa j[k fn;kA bl ekeys dh lquokbZ ;gka dh ,d vnkyr esa py jgh gSA vnkyr dks crk;k x;k fd;k fd nsj ls vkus ds lo9ky ij mDr efgyk xqLls esa ykyh gks xbZ vkSj pkdw ls vius ifr dk dku dkV dj mlds gkFk esa j[k fn;kA efgyk dk rdZ Fkk fd og vius ifr ds crkuk pkgrh Fkh fd vius dke ls dke j[ksA ;gh dkj.k Fkk fd mlus dku dkV MkykA bl ?kVuk ds ihfM+r ifr dk uke mtkxj ugha fd;k x;k gSA ysfdu HkqXrHkksxh us crk;k fd mldh iRuh cgqr tYn xqLls esa vk tkrh Fkh vkSj og bl ls igys Hkh dbZ dkj mldh fiVkbZ dj pqdh gSA vnkyr us mlls f'kdk;r u djus dk dkj.k iwNk rks crk;k x;k fd og yksd ykt ds /;ku esa j[krs gq, ,slk ugha dj ik;kA vnkyr us fQygky efgyk dks tekur ij NksM+ fn;k gSA bl ds vykok iqfyl ls bl ekeys dh xgu tkap djus ds Hkh vkns'k fn,A IFkkuh; ehfM;k us bl ekeys dks cgqr mNkyk gSA dqN v[kckjksa us vkjksih efgyk dks ckdkMs dh laKk nh gSA

इधर—उधर की

आप भी इस स्तम्भ के लिए कुछ खास खबरें जो आपके संज्ञान में हो या कोई नया आविष्कार हुआ हो तो हमें भेज सकते हैं। अच्छी खबर को हम अवश्य ही प्रकाशित करेंगे। अच्छी खबरों के छपने पर हम आपको हजारों रुपये के ईनामी कूपन भी भेजेंगें तो देर किस बात की। कलम उठाइए और लिख भेजिए हमारे पते पत्र–व्यवाहार के पते पर।

गुप्त रोगों का सफल ईलाज

नामर्दी, स्वप्न दोष, शीघ्र–पतन, धातु पतला, छोटापन, पतलापन, टेढ़ापन, लिकोरिया, मासिक गड़बड़ी, चेहरे की छाईयां और गुप्त रोगों का सफल ईलाज

+ हकीम एम0शमीम +

SC. UM(CAL) Reg.

होटल समीरा
काटजू रोड निकट रेलवे स्टेशन
इलाहाबाद

मिलने का समयः
प्रत्येक माह 16 से 20 तारिख
सुबहः 9 से रात्रि 8 बजे तक।

SHANTI
AQUARIUM TRAVELS

Mo: 9415218729
☎: 2557307, 2409035
(Br.) 2465764

AQUARIUM: Breeder, Wholeseller of All kinds of Imported & Indian Fancy Fishes & Aquarium Accessories

Courier Service, Shanti Travels

AC/Non-AC Maruti Car, Van, Sumo, Qualis, Steam, Contessa on hire

Cont. : 172, T.N. Rai, New Bairahana, Allahabad

संस्थापित :1987 उ0प्र0 सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त ☎ 2636421

श्याम लाल इंटर कॉलेज

चकिया, कसारी–मसारी, इलाहाबाद

कक्षा :केजी से 12 तक (विज्ञान एवं कलावर्ग)

(बालक / बालिकाओं)

प्रबंधक
अनिल कुशवाहा

25 जून से प्रवेश प्रारम्भ है।

प्रधानाचार्या
सुनीता कुशवाहा
(एम.एससी.बी.एड)

बम्पर छूट समय पर मासिक पत्रिका "विश्व स्नेह समाज" अब आपके दरवाजे पर **बम्पर छूट**

पत्रिका के वार्षिक / द्विवार्षिक / आजीवन सदस्य बनिए और जीतिए हजारों रूपयें के ईनाम

पत्रिका के तीसरी वर्षगांठ के अवसर परसदस्यता राशि में 30 सितम्बर 2003 तक विशेष छूट

भारत में: मूल्य वार्षिक (साधारण डाक से) रु030 / 00, **विदेशों में** (नेपाल व भूटान को छोड़कर) साधारण डाक से रु0 150.00, **आजीवन सदस्य** : रु0 700.00 भुगतान का माध्यम चेक / मनीआर्डर / डिमांड ड्राफ्ट। इलाहाबाद से बाहर चेकों के लिए रु0 20. 00 अतिरिक्त राशि देय होगी। कृपया चेक / ड्राफ्ट / मनीआर्डर निम्न पते पर भेजें।

विज्ञापन प्रबंधकः
मासिक पत्रिका "**विश्व स्नेह समाज**", एल.आई.जी.–93,
नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

सदस्यता फार्म

मैं श्री / मि0 / श्रीमती ....
पुत्र / पुत्री / पत्नी श्री ....
निवासी ....
व्यवसाय .... फोन न0 मासिक पत्रिका विश्व स्नेह समाज का वार्षिक / द्विवार्षिक / पंचवर्षिय / आजीवन सदस्य बनना चाहता हुं। इस हेतु रुपये .... मात्र शब्दों में ...... नकद / डीडी / मनिआर्डर / से भेज रहा हूँ / रही हुं।

हस्ताक्षर सदस्य

नोटः 1. निवासी की जगह पर पत्र व्यवहार का पता ही लिखे।
2. पत्रिका डाक से देर से मिलने पर पत्र के माध्यम से अवश्य सूचित करें। हम आपके लिए दूसरी प्रति भेजने का प्रयास करेंगे।